५०% बचाइये

दो की ज़रूरत हो तो
सिर्फ़ एक ख़रीदिए





कॅम्लिन की 'अन्ब्रेकेबल' पेंसिल ज़्यादा दिन चलती है।

खूब अच्छी तरह कॉम्प्रेस्ड् की गयी लेड और सावधानीपूर्वक अनुकूल की गयी लकड़ी दोनों को एक विशेष प्रक्रिया द्वारा एक-दूसरे से जोड़ दिया गया है। यह प्रक्रिया स्वयं कॅम्लिन की अपनी बनायी हुई है। इसके कारण पेंसिल टूटती नहीं। नोक आसानी से बन जाती है। आपको ऐसी पेंसिल मिलती है जो दूसरी पेंसिलों से दुगनी चलती है। अब कॅम्लिन की 'अन्ब्रकेबल' पेंसिलों पर एक विशेष निशान होता है, ताकि आप इन्हें आसानी से पहचान ले। जब भी आप पेंसिले ख़रीदें इस-निशान का ध्यान रखें और पैसे बचायें।

इन नामो को ध्यान में रखिए जो आपके लिए अच्छी क्वालिटी की गारंटी हैं।

त्रिवेणी, सुप्रीम, एक्सेला, रीगल

कॅम्लिन

अन्ब्रेकेबल' पेंसिलें

कॅम्लिन प्राइवेट लिमिटेड
आर्ट मटीरियल डिवीज़न,
बम्बई ४०० ०५९

कॅमल आर्ट मटीरीयल बनाने वालों की देन

VISION/795/R/HIN



कैक्टस क्यों लगायें



कैकटस पर आप रूमाल या जुराबें सुखाने के लिए डाल सकते हैं। कांटों के कारण उनके हवा से उड़ने का कोई डर नहीं रहता।



आप बे खटके कहीं चले जाइये। सात-आठ दिन बाद आइये कैकटस मजे से खड़ा मिलेगा। दूसरे सारे पौधे मुरझा चुके होंगे।



चोर, डाकू घुस जाये तो उससे हथियार का काम लिया जा सकता है। कैकटस कांटों से दर्दनाक चोट कर सकता है।



कैकटस के पास से आप गुजरें तो वह साड़ी का पल्ला कांटों से पकड़ लेगा। आपको शादी के बाद के दिनों की सुमधुर याद आयेगी।



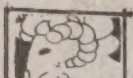
कैकटस के बारे में अधिकतर लोगों को कुछ पता नहीं होता। आप कैकटस का जिक्र करके अपनी सहेलियों पर रौब जमा सकती हैं। वह मुंह ताकती रह जायेंगी।



कैकटस को देखकर आप अपने जूड़े के लिए नये-नये डिजाइनों की कल्पना कर सकती हैं।

आपका भविष्य

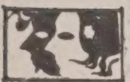
पं० कुलदीप शर्मा ज्योतिषी सुपुत्र दैवज्ञ भूषण पं० हंसराज शर्मा



मेष : कारोबार के हालात ठीक चलेंगे, परिवार में शांति बनी रहेगी, मित्रों से सहानुभूतियां मिलेंगी, यात्रा करने के विचार छोड़ दें, इस सप्ताह खर्च अधिक होने की संभावना है।



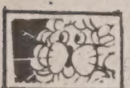
वृष : संघर्ष काफी रहेगा और खर्च भी कम होगा लेकिन शेष सप्ताह लाभ करीबन ठीक चलेगा, भाग्य उन्नति, काम-धन्धे साधारण चलेंगे, हालात ठीक यात्रा में सफलता मिलेगी।



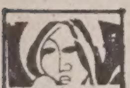
मिथुन : कुछ विशेष एवं शुभ परिवर्तन देखने में आयेंगे, दीर्घकाल से चली आ रही आर्थिक कारोबारी एवं घरेलू उलझनें दूर होने लगेंगी, जरा सावधानी से रहें, यात्रा न करें।



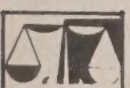
कर्क : सप्ताह कुछ संघर्ष में तो है परन्तु बुद्धि बल और अच्छे लोगों के परामर्श से सफलता पाते रहेंगे, कारोबार से यथार्थ लाभ, परिवार से सुख सहयोग, राजकीय कामों में विजयी होंगे।



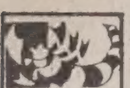
सिंह : यह सप्ताह पहले से अच्छा है, कुछ अधूरे या विशेष कामों में सफलता, कारोबार सुधरेगा, आर्थिक दशा पहले जैसी हो, मान वृद्धि, बड़े लोगों के सहयोग से सफलता की प्राप्ति।



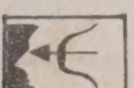
कन्या : अनावश्यक और अधिक खर्चा होने से मन में अशान्त रहेगा, अन्य दिनों में सुधार एवं प्रगति होगी, और बाधाओं पर भी विजय मिलती रहेगी, परेशानी बढ़ेगी।



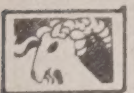
तुला : सप्ताह अच्छा है, सुस्ती या स्वभाव में गुस्से से कामों में बाधा, लाभ में देरी आएगी, अन्य दिनों में बिगड़े काम बनेंगे, शत्रु एवं बाधा का नाश, लाभ बढ़ेगा।



वृश्चिक : इन दिनों अच्छे व बुरे मिले-जुले फल प्राप्त होंगे, अनावश्यक खर्च रहेंगे, लाभ भी होता रहेगा, शरीर में नरमी, घर गृहस्थी के कामों में परेशानी, मित्रों से मदद मिलेगी।



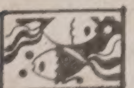
धनु : शुभ फलों में वृद्धि होती आएगी, वाणी की चतुरता से काम बना लोगे, बिगड़े सम्बन्धों में भी सुधार आएगा, लाभ के साथ-साथ खर्चा भी रहेगा, व्यापर में शनै-शनै उन्नति होती रहेगी।



मकर : इन दिनों संघर्ष काफी करना पड़ेगा, और परेशानी भी काफी रहेगी, जबकि अन्य दिनों में हालात ठीक चलेंगे, लेकिन छोटी-छोटी बातों को लेकर आपसी झगड़े होते रहेंगे।



कुम्भ : कोई अप्रिय घटना या समाचार, यात्रा में कष्ट, घर-गृहस्थी में झंझट भी ज्यादा रहेंगे लेकिन बाधाएं दूर होने लगेंगी, बिगड़े काम या रिश्ते ठीक होते नजर आयेंगे, व्यस्तता बढ़ेगी।



मीन : कामधन्धों की हालत पहली जैसी ही, पराक्रम में वृद्धि, वाणी चतुरता से काम बना लोगे, मान प्रतिष्ठा भी बढ़ेगी, सामने अनेक विघ्न आयेंगे लेकिन स्वतः ही शीघ्र दूर हो जायेंगे।

आपके पत्र

दीवाना का अंक 24 प्राप्त हुआ। मुख पृष्ठ पर चिल्ली को हवा में उड़ता देख हंसी का फव्वारा फूट पड़ा। इस अंक के दीवाना फ्रेंड्स क्लब में अपना फोटो छपी देख मैं खुशी से झूम गया। मुझे उम्मीद न थी कि मेरा नम्बर इतनी जल्दी आ जायेगा। अन्दर मोटू पतलू नजर अपनी-अपनी, सिलबिल-पिलपिल, व लल्लू को पढ़ कर तो हंसी को रोकना ही मुश्किल हो गया।

मेरा आपसे अनुरोध है कि आप 'हंसना मना है' में जो चुटकले छापते हैं। कृपया चुटकले भेजने वाले का नाम व पता भी छाप दिया करें। जिससे चुटकले भेजने वाले को अत्यंत प्रसन्नता होगी।

प्रवीण कुमार—गुप्ता,

अब हम किसी पाठक का भेजा हुआ चुटकला छापते हैं तो उसका नाम अवश्य छापते हैं। —सं०

दीवाना अंक 24 प्राप्त हुआ, पढ़कर मन मयूर की तरह नाच उठा। इस पत्रिका के कुछ स्तम्भ बड़े रोचक होते हैं। फीचर, हास्य कहानियां हंसी की सामग्री (चुटकले) तथा मोटू-पतलू गरीब चंद की डाक इत्यादि स्तम्भ बड़े रुचिकर कालम होने के कारण ही इस पत्रिका को मजबूरन पढ़ना पड़ता है वरना आपके कुछ नियमित स्तम्भ पढ़ते-पढ़ते तो अधिकांश दीवाना प्रेमी बोर हो चुके हैं। क्या अच्छा हो इन निम्न स्तम्भों को समाप्त कर दीवाना के पाठकों को प्रसन्न करें। सिलबिल-पिलपिल व फैण्टम विशेष रूप से बोर करने वाले स्तम्भ हैं। अंक 24 में कहानी जूड़े बनाम मूढ़े अच्छी लगी। फीचर नजर अपनी अपनी अमीर गरीब व शीतल गाइड बेहद पसंद आई। लल्लू तथा गरीब चन्द की डाक।

रामकुमार परवाना—फैजाबाद

हमेशा की तरह काफी इन्तजार के बाद दीवाना का अंक मिला। प्रथम पृष्ठ पर छपी तस्वीर ने सभी का मन मोह लिया। मोटू-पतलू डेंगू को पढ़ते पढ़ते, हंसते बुरा हाल हो गया। सिल-बिल पिलपिल का हॉकी फाईनल पसन्द आया हास्य व्यंग्य 'जूता सलामत रहे।' कहानी बेहद पसन्द आयी। मूवी मसाला और क्यों और कैसे पढ़कर हमें नई बातों का पता चला। गरीब चन्द की डाक पढ़ कर गरीब चन्द के दिमाग को दाद दी।

कुलविन्द्र जौड़ा—कृष्णा पार्क

नए साल का नया अंक न०1 देखकर बड़ी प्रसन्नता हुई। मुख पृष्ठ बहुत ही सुन्दर व हास्यप्रद लगा। 'जूता सलामत रहे' कहानी बहुत दिलचस्प लगी। परन्तु 'दीवानी-चिपकियों' ने हँसा-हँसाकर पेट में बल डाल दिए। सिलबिल-पिलपिल' तथा एशियाई खेल और फैशन' मनोरंजक लगा 'क्यों और कैसे' पढ़कर ज्ञान में वृद्धि हुई। इस बार 'गरीब चन्द की डाक' काफी रोचक लगी, परन्तु फिलमी ड्रामा न पाकर दुःख हुआ। कृपया अगले अंक में फिल्म 'जीयो और जीने दो' का ड्रामा जरूर प्रकाशित करें। आशा है आप इस ओर ध्यान देंगे ?

तजेन्द्र भाटिया—विजय नगर दिल्ली

मुख पृष्ठ पर

सुन्दर बदन को देखके चिल्ली
मोहित हुआ एक जलपरी पर
काश! यह होती मेरी बांहो में
और मैं होता इसका वर।
लेकिन हो यह कैसे मेरी
बात समझ में तब यह आई
नहीं जायेगी बचकर अब तो
छलांग लगाई और जाल में आई॥

दीवाना

अंक : ३ वर्ष : १९ १-१४ फरवरी १९८३

सम्पादक : विश्व बन्धु गुप्ता
सहसम्पादिका : मंजुल गुप्ता
दीवाना तेज पाक्षिक
८-बी, बहादुरशाह ज़फर मार्ग
नई दिल्ली-११०००२

वार्षिक चन्दा	:	२७ रुपये
अर्द्ध वार्षिक	:	१४ रुपये
एक प्रति	:	१.५० रुपये

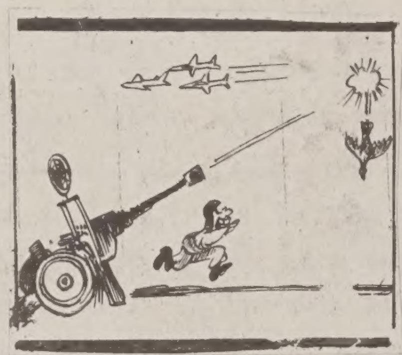
अभिलाषा

जतन

सड़कें सुनसान पड़ी थीं, यहाँ तक कि चिड़ियों की चहकने की आवाज भी नहीं आ रही थी। बाजार में खड़े होकर देखा तो दुकानदार कभी एक दूसरे का मुँह देखते तो कभी सूर्य की तरफ और फिर अपनी दृष्टि को सूनी सड़कों की तरफ फेंकते शायद कुछ देखने को। सूर्य पूरी तरह से चमक रहा था। सड़कों पर कोई नजर नहीं आ रहा था, कर्फ्यू भी नहीं था। बस यही सोचकर वे निराशा में अपना सिर झटकते और सोचते आखिर कहां मर गये, कहां मर गये ये सारे के सारे ग्राहक। यह देखकर मेरा भी सिर चकराया, बस फिर क्या एक दम 19 नवम्बर का ध्यान आया। चिर प्रतिक्षित कल्पनाओं को आकार देने की अनूभूति मात्र ने मुझे बल्लियों हवा में उछाल दिया।

अब से पहले की गयी कल्पनाएं किसी छोटी सी कमी की वजह से मुझे कुछ भी बनाने में कामयाब नहीं हो पायी थीं। क्रिकेट में भारत को वर्ल्ड कप में श्रीलंका के हाथों पिटते देखा। मैंने सोचा क्यों न ऐसा आलराउन्डर बना जाय जो मात्र तीन ओवरों में सेंचुरी लगाकर और विपक्षी टीम को एक ही ओवर में (दो नो बाल के सहारे) आउट कर मिट्टी चटा दे। एक के बाद एक रिकार्ड तोड़कर गैरी सोबर्स, बायकाट, डान ब्रैड मैन लिली और अच्छे-अच्छे रिकार्डों पर आसीन खिलाड़ियों को ये दिखा दे कि उनके रिकार्ड वास्तव में कुछ भी नहीं हैं। यही नहीं, बस भारत के साथ सीरीज का नाम आते ही सभी देश हार मानने को तैयार हो जायें। हमारी ये कल्पना दो छोटी सीं कमियों की वजह से पूरी नहीं हो पायी। एक तो ये, बैटिंग करते समय बाल आते ही क्रीज छोड़ देते थे। दूसरी ये कि हमारी फेंकी हुई गेंद अक्सर वाइड होती और कभी किसी बाल में हम यह कमी दूर करते तो वह विकिट तक भी नहीं पहुंच पाती। इस तरह हमारी यह कल्पना मात्र कल्पना ही बन कर रह गयी है।

हमें याद है 1976 के ओलम्पिक खेल जिनमें पदक तालिका में भारत का नाम कई बार ढूंढ़ने से भी नहीं मिल पाया था और जैसे-तैसे 1980 के मास्को ओलम्पिक में एक मात्र स्वर्ण पदक हाकी में हासिल कर पाया। इतने बड़े देश भारत में खिलाड़ियों की इतनी कमी ने हमें कुछ सोचने को मजबूर कर दिया। सोचा दूसरों देशों के एक-एक खिलाड़ी ही सात सात स्वर्ण पदक जीत सकते हैं और हम सब मिलकर एक भी नहीं। बस हमने सात तो क्या



बीसों स्वर्ण पदक अकेले हासिल करने की सोच ली। सामने एक ही कमी नजर आती थी कि अभी तो न खेलों के नाम तक याद हैं और न ही उनके नियम। इस कमी को पूरा करने के लिए हमने अपनी नजर एशियाई खेलों पर गड़ा दी सूनी सड़कों और दुकानदारों ने यकायक उस दिन का आभास करा दिया जिस दिन हम कुछ कर दिखाने के लिए बस थोड़ा सा सीखने वाले थे।

उद्घाटन समारोह की सफलता के बाद वे दो खेल शुरू हुए जिनमें एक ही खिलाड़ी वास्तव में कई स्वर्ण पदक हासिल कर सकता था। ये थे तैराकी और जिमनास्टिक। तैराकी का निरीक्षण हम बड़ी सूक्ष्मता से कर रहे थे, देखा लोग बस चार तरीके से तैरते हैं। एक में हाथ बारी-बारी से आगे पीछे, दूसरे में हाथ और पैर आगे पीछे और हर बार बाहर व भीतर, तीसरे में दोनों हाथों को एक साथ पानी के ऊपर पटकना था और चौथे में तो बस उल्टे पानी पर लेटकर पानी को पीछे खींचना था। इतना सीखना था कि सीधे पूल पर पहुंच गये। जाकर कूदने ही वाले थे कि वहाँ पर खड़े तैराकी सिखाने वाले गुरु जी ने पूछा कि तैरना आता है कि नहीं। हमें गुस्सा आया, बोले अरे साहब हम तो जन्म जात तैराक हैं।

जन्म से आज तक इस संसार रूपी सागर में तैर नहीं रहे तो क्या कर रहे हैं? ऊपर से साहब पूछने चले हैं कि तैरना आता है कि नहीं। वह हमारी वाक पटुता को देखकर थोड़ा आश्चर्य में हुआ और मूर्खता के ऊपर थोड़ा हँसा भी। बोला, 'गहरा पानी इधर है यहां तैरिये।' उत्साह में मैंने छलांग लगायी। सिर के बल पानी में अन्दर जाने की बजाय में पेट के बल जाकर गिरा। गिरते ही मानो दम सा निकल गया। दो चार बार हाथ पैर इधर उधर मारे, लगे पानी में डुबकी खाने। जल में कई बार ऊपर नीचे होकर काफी पानी पी गया तो बाहर खड़े हुए गुरुजी को तरस आ गया। उन्होंने बाहर निकाल कर पहले तो अन्दर भरा हुआ पानी निकाला और फिर बेहोशी की अवस्था में मुझे मेरे घर पहुंचाया। मैंने भगवान को धन्यवाद दिया, इसलिए नहीं कि मैं जिंदा था बल्कि इसलिए कि भारत की वे भावी आशाएं, जो दोबारा जन्म लेंगी या नहीं, अभी जिन्दा हैं।

थोड़ी राहत महसूस होते ही टी. वी. रूम में जाकर धरना दे दिया। इस बार जिमनास्टिक की प्रतियोगिताएं आ रही थीं। आवाज आ रही थी समानान्तर बार पर चीन के खिलाड़ी अपना करतब दिखा रहे हैं और ये उन्होंने ट्रिपिल समर शाट के साथ समाप्ती की। उन्होंने इसके लिए 9·8 अंक प्राप्त किए। इस बार जिनको आप देख रहे हैं, इनको तो आप

इनका खेल देखकर ही पहचान गये होंगे। ये हैं भारत के। इन्होंने सिंगल समर शार्ट लगाकर ही समाप्ती करनी चाही परन्तु वे उसमें भी गिर पड़े। उन्होंने केवल 5·0 अंक प्राप्त किए। यह देखकर मैंने अपनी यानी भारत की भावी आशा की तरफ देखा। भुजाओं की पेशियां फड़-फड़ा उठीं। सभी प्रतियोगिताओं को देखने के बाद हमें अपने विश्वविद्यालय के जिमनास्टिक रूप में रखी अनेकों चीजें, जो अब तक बिना मतलब की दिखाई पड़तीं, कुछ काम की दिखाई पड़ने लगीं। दूसरे दिन जाकर हमने अपनी टांगें राइडिंग हार्स के चारों तरफ उसी अन्दाज में घुमानी शुरू कीं जैसा कि पिछले दिन लय और ताल में घुमाते हुए एक चीन के जिमनास्ट को देखा था। एक टांग तो जैसे-तैसे पार हुई कि दूसरी उठने का नाम ही नहीं ले रही थी। काफी देर जोर लगाने के बाद जब उसको पार करने में सफलता नहीं मिली तो सोचा कि पहली टांग को ही वापिस लाया जाय परन्तु फिर भी असफलता ही हाथ लगी। हमने दोनों टांगें इधर-उधर किये किसी सहारे की तलाश में देखा। कुछ ने हमारे चेहरे की मासूमियत को देख कर आखिर हम पर दया कर दी। क्योंकि हमारे हाथ पैर अभी तक सही सलामत थे। इसलिए हमारा उत्साह अभी शायद जरा भी कम नहीं हुआ था। सोचा कि होरि-जैन्टल बार पर कुछ करना आसान हो। उछल कर हमने बार पकड़ ली। चारों तरफ चक्कर खाने के लिए जोर से अपने शरीर को झटका दिया। झटके के साथ ऊपर जाने की बजाय हाथ छूटते ही हम सीधे जमीन पर आकर गिरे। आस-पास खड़े लोग हमारे विचित्र तरह के समर शाट को आश्चर्य से देखते रहे। गिरकर जब हमारी कराह निकली तो उन्हें अचानक कुछ ध्यान आया और आकर हमें उठा कर अस्पताल पहुंचाया। कूल्हे की हड्डी टूट चुकी थी। होश आया तो शरीर के निचले काफी भाग पर प्लास्टर चढ़ा पाया। हाथ अभी ठीक नजर आ रहे थे। अपनी खटिया जिद करके फिर टी. वी. के पास डलवायी। इस बार बाक्सिंग के फाईनल आ रहे थे। मुकाबला साउथ कोरिया तथा भारत के मुक्केबाज के बीच था। भारत के मुक्केबाज की धुनाई रूई की तरह की जा रही। देख कर बड़ा गुस्सा आया और अपने घूंसे को तानकर खटिया में पड़े-पड़े उठाया। अचानक ही जोश में आकर चार पांच घूंसे पास की दीवार में एक साथ जड़ दिए। बस रही सही कमी भी पूरी हो गई। तीन अंगुलियों की हड्डियाँ टूटने के कारण इस बार हाथ पर भी प्लास्टर था।

हमें अभी भी पूर्ण विश्वास है कि सरकार 1984 के मांट्रियल ओलम्पिक के लिए अपनी पदक आशा को अवश्य ही पटियाला में लगे कैम्प में आने की दावत देगी और हम भविष्य में होने वाले महान् खिलाड़ी की इज्जत रख अपनी अभिलाषा पूरी करेंगे।


मोटू पतलू
हेराफेरी नहीं
कहानी एवं चित्रांकन : रघुबीर सिंह
मोटू, पतलू, घसीटा, झटका तथा चेला अपने कमरे में बैठे आपस में बातचीत कर रहे हैं।
अरे भाईयों, आज मैं दिवाने महल गया था और दीदी की मेज पर सबसे आँख बचाकर एक शपथ पत्र छोड़ आया हूँ।
अबे मोटू उसमें क्या लिखा है?
शपथ-पत्र में लिखा है तमाम पाठक जन हमारी ओर से शपथ लें कि आज के बाद मोटू, पतलू, घसीटा, झटका तथा चेला कभी हेराफेरी नहीं करेंगे।
तो भईया हमें ऐसा काम करना चाहिये जिसमें किसी किस्म की हेराफ़ेरी ना हो।
चलो सन्यास ले लेते हैं।
अरे मैं सन्यास तो ले लूँ पर देश के मरीजों का क्या होगा?
अरे उनका क्या होना है वो दस-बीस साल और ज्यादा जी लेंगे।
पर क़फ़न बेचने वाले भूखे मर जायेंगे।
वो कैसे?
Raghubir


अरे बेवकूफ जब डा॰ झटका मरीजों का झटका ही नहीं करेगा तो कफ़न कौन खरीदेगा, अब इन फालतू बातों को छोड़ कर सब सन्यास ले लो।
चलो हम सब शहर छोड़ चलें और हेरा फेरी ना करें।
वो सब शहर छोड़कर नदी के किनारे-किनारे चल पड़ते हैं।
अरे भगवान ने हमारी सुन ली। वो देखो पाँच साधु नदी में नहा रहे हैं।
अब हम सन्यासी हैं। भाइयों, हमें अब भगवे कपड़े डालने चाहियें।
तो देर क्यूँ कर रहे हो उन पाँचों के कपड़े घसीट लो।
हाँ, ये तो भगवान के नाम पर करना ही पड़ेगा।
अरे भाईयों, बाकी सामान का भी झटका कर लो लेकिन ध्यान रहे हेरा फेरी ना करना।
चलो फटाफट अपने कपड़ों पर ही ये चोले पहन लो।
हाँ ऐसा ही करते हैं ताकि हमारी खानदानी ड्रेसें सुरक्षित रहें।
और कहीं जरूरत पड़ने पर हम ये चोले उतार भी सकते हैं।
वो पाँचों साधुओं के कपड़े और सामान पहन लेते हैं।
अरे भुखमरों, अब हम असली भुखमरे हो गये हैं।
Raghubir Singh



मोटू महाराज की जय हो, अब तो आप भगवे वस्त्र पहन कर महान् लगते हैं।
घसीटू जी चाहता है तेरी टाँग घसीट कर उसी दरिया में डाल दूँ जहाँ पर साधु नहा रहे थे।
क्या बात हो गई मोटू महाराज जी, आप इतने अशांत क्यूँ हो रहे हैं?
अरे कमबख्तों हेराफेरी छोड़ दी, भगवे वस्त्र पहन लिये तो अब खायेंगे क्या!
महाराज सन्यासी को यदि भोजन ना मिले तो वो भजन करते हैं।
भजन कर तू, भजन करे तेरा बाप, भजन करे तेरी होने वाली औलाद! मैं तो भूख से मर रहा हूँ। मुझे भोजन दो। नहीं तो मैं अपना चोला फाड़ने लगा हूँ।
अरे भाइयों, वो देखो एक मंदिर है, वहाँ चल कर देखते हैं शायद वहाँ कुछ खाने का इंतजाम हो जाये।
अरे कमबख्तों वो मंदिर तो गाँव के बाहर है, वहाँ पर क्या मिलेगा वहाँ तो बकरियाँ ही बकरियाँ नजर आ रही हैं।
मोटू महाराज एक प्लान सूझा है।
फटाफट बक दे पतलू। क्या उस प्लान में कोई खाने-पीने का प्रोग्राम है?



हाँ महाराज,इन बकरियों में एक काला बकरा देख रहे हो। उसको भगवान के मंदिर में ले जाकर उसकी बलि दे देते हैं और फिर पका कर खा लेंगे जिससे हमारा पेट भी भर जायेगा और भगवान भी खुश हो जायेंगे।
ये कोई हेरा-फेरी भी नहीं।
पतलू महाराज की जय हो।
वो सभी मोटे काले बकरे को मंदिर में ले जाते हैं। और डा॰ झटका उसका झटका करता है। और फिर पकाकर खा-पी-कर सो जाते हैं।
खचाक
बकरे की हड्डियाँ और खाल दबा देते हैं।
सुबह उन्हें लाठी खड़कने की आवाज़ आती है।
टक-टक-ssssss
अरे भाईयों,रात को बकरे का झटका किया था। अब ये हमारा झटका करने के लिये आये हैं।
अबे चुप कर,हो सकता है किसी और काम से आये हों।
हम पाँचों को सगन डालने आये हैं।
अरे कमबख्तों भूल गये। हम पाँचों अब सन्यासी हैं। हमने हेरा फेरी और दुनिया छोड़ रखी है। हम शादी नहीं करेंगे।
अरे वाह! कह तो ऐसे रहा है जैसे बाहर द्रोपदी का स्वयंवर रचा हो। मूर्खों भागने का रास्ता ढूंढ़ो।
भाइयों, ये दुनिया ही छोड़ दी तो फिर ये शरीर भी छोड़ना ही है चाहे इसे दस साल बाद छोड़ें या चाहे ये लोग लाठियाँ मार-मार कर अभी छुड़ायें। जब छोड़ना ही है तो फिर हम भागें क्यूँ। यहीं पड़े रहो।
तो फिर पड़े रहो यहीं और गिनते रहो की कौन कितनी लाठियों से मरता है।
Raghubir Singh



तभी बाहर से रोने की आवाज़ आती है
हाय महाराज, मैं मर गया लुट गया बर्बाद हो गया। महाराज हमें दर्शन दीजिये।
भाइयो चुप रहो। बन गया काम ये तो उल्टा ही मामला है।
वो बकरे की तरह चिल्ला रहा है और तू कह रहा है मामला बन गया।
वो मारा पापड़ वाले को। ओ चेले तू डेढ़ मिनट अपनी उम्र से ज्यादा जिये। काम बन गया, तुम सब मेरे पीछे बाहर आओ।
मोटू बड़ी तेजी से बाहर आता है। तड़ी से कहता है -
मोटू महाराज की जय हो।
ये तो अंतर्यामी हैं
ये कोई पहुँचे हुये महात्मा लगते हैं।
इन्हीं महाराज की शक्ति से हमारे यहाँ पुत्र पैदा हुआ।
अरे मैंने इन्हें हिमालय पर्वत पर देखा था।
महाराज आप वही हैं जिन्होंने हमें बद्रीनाथ पर प्रसाद दिया। और हमें आशीर्वाद दिया।
हम जानते हैं तुम्हारा बकरा खो गया है। तुम उसी के लिये यहाँ आये हो।
आप सब की याद्दाशत तेज है।
महाराज ये गाँव वाले आपके पुराने भक्त दिखाई देते हैं।
बेटा हमारे भक्त सारे संसार में हैं। और हम कहीं रूक नहीं सकते जैसे नदी का पानी, मन की लहरें, आदमी की आयु और आदमी की दाड़ी और मूँछों का बढ़ना नहीं रूकता वैसे हम भी अब नहीं रूक सकते। अब हम जायेंगे।
महाराज मेरा बकरा!
अरे बेवकूफ, क्या महाराज ने तेरे बकरे का झटका कर दिया? क्या तेरा बकरा वो खा गये? जो बकरा-बकरा कर रहा है। अबे महाराज से माँगना ही है तो मोक्ष-ज्ञान माँग।
महाराज इसे क्षमा करें। ये बकरे के मोह में फंसा हुआ है। इसे आप ज्ञान दें और यहाँ से चलने की तैयारी करें।


बेटा ये शरीर नाशवान है। संसार में जो कुछ दिख रहा है ये सब नाशवान है। यहाँ कोई अपना नहीं। यहाँ तक की वक्त आने पर ये शरीर साथ नहीं देगा तो फिर बकरे ने क्या साथ देना था।
पर मेरा बकरा!
पर मेरा बकरा।
पर मेरा बकरा!
अरे हमारे चरण कमल को छोड़ और भगवान की ओर मन लगा। क्या बकरा-बकरा कर रहा है।
अरे महाराज के चरण छोड़ उनको तंग मत कर। आगे ही वो यहाँ रहना नहीं चाहते।
अरे भाई हमने तेरा बकरा खा लिया है तू हमारे महाराज के चरण छोड़ और हमसे पैसे लेले।
अब महात्मा तंग आकर क्या करें। इस पर किसी उपदेश का असर नहीं हुआ तो वो पैसे देने को तैयार हैं और अपने ऊपर इल्ज़ाम ले रहें हैं।
पर मेरा बकरा!
राम-राम-राम क्या महाराज बकरा खा सकते हैं?
पर मेरा बकरा!
धन्य हैं ऐसी महान आत्मायें, कम ही होती हैं।
तभी चेला वहाँ पर खड़े जमींदार की जेब से पर्स मार लेता है।
चेले इस बकरे वाले को घसीट कर एक तरफ कर।
मोटू श्लोक पढ़कर चेले को समझाता है कि पर्स बकरे वाले की जेब में डाल दे।
चेले हमने लगाया ध्यान हुआ है जमींदार का कल्याण हेरा-फेरी छोड़ बकरे वाले का कर कल्याण नहीं तो ये बना देंगे हमारा कब्रिस्तान।
हो गया हमें सब ज्ञान जो है मोटू महाराज का फरमान।
चेला बकरे वाले को हटाते समय उसकी जेब में पर्स डाल देता है।
महाराज के पाँव छोड़ दे।
मेरा पर्स!
पर मेरा बकरा!
पर मेरा बकरा!
पर मेरा बकरा!



मोटू, पतलू, घसीटा, झटका तथा चेला गाँव में रुकते हैं कि नहीं,? क्या वो पाँचों भूतों से बच जाते हैं? क्या गाँव वालों के सामने उनकी असली पोल खुलती है या नहीं? ये सब जानने के लिये अगले अंक में पढ़िये।

बुलबुल कुटी

भाग-३

राकेश उसे वहीं के वहीं समाप्त कर देगा और देवेनराय को फोन कर कह देगा कि उसे अचानक कहीं जाना है। ओह यदि देवेन आज शाम को यहां आ रहा होता ! यदि देवेन............

अचानक उसके दिमाग में एक तरकीब आई। उसने किनोर से अपने पति की ओर मुस्तैदी से देखा, मानो उसे डर था कहीं उसका पनि उसके मन की बात जान न जाये। दिमाग में प्लैन बनते ही उसके शरीर में ताकत सी आ गई। वह अपने व्यवहार में इतनी साधारण हो उठी कि स्वयं इस पर हैरान हो गई।

उसने काफी बनाई और बाहर पोर्च में ले गई, जहां सुहावनी शामों को वे अक्सर बैठा करते थे।

'बातों-बातों में राकेश ने कहा, 'हम वे फोटोग्राफ कुछ देर बाद करेंगे।'

निशा के शरीर में एक कंपकंपी दौड़ गई, पर फिर भी हिम्मत कर उसने राकेश से पूछ ही लिया 'क्या तुम अकेले नहीं डवैलप कर सकते ? मैं आज रात कुछ थकी हुई हूं।' इसमें कुछ भी देर नहीं लगेगी।' और वह स्वयं ही मुस्करा या' और साथ ही मैं तुमसे वादा करता हूं। इसके बाद तुम्हारी थकावट भी मिट जायेगी।'

शब्द उसे प्रसन्न कर रहे थे, निशा कांप गई। अभी या फिर कभी नहीं उसे अपने प्लैन पर अमल करना होगा वह उठ खड़ी हुई।

मैं सिर्फ बुचर को फोन करूंगी, उसने लापरवाही से कहा।

तुम्हें हिलने की जरूरत नहीं।

बुचर को ? इतनी रात के वक्त ?

'बेशक उसकी दुकान बन्द होगी, बुद्धू पर वह अपने घर में तो होगा ही और मुझे कुछ वील कटलेट्स सुबह-सुबह ही चाहियें फिर कल शनिवार है यदि वह कटलेट्स सुबह जल्दी न लायी तो कोई और उन्हें झपट ले जायेगा। वह बेचारा बूढ़ा मेरे लिये सब कुछ कर देगा।"

वह जल्दी से घर के भीतर चली और पीछे से दरवाजा बन्द कर लिया। उसे राकेश की आवाज आई 'दरवाजा बन्द न करो' और उसने जल्दी से जबाब दिया'। इससे पंखों वाले मच्छर भीतर नहीं आ पाते, मुझे पंख वालों से बेहद नफरत है,। 'बुद्धू ! तुम्हें डर है क्या मैं बुचर से प्रेमालाप करूँगी।

एक बार वह अन्दर पहुंच गई, तो उसने टेलीफोन झपट कर ट्रेवलर्स आर्म का नम्बर दे दिया। फौरन हीं उसका टैलीफोन मिला दिया दिया गया।

'मि० देवेन राय ? क्या वे अभी भी हैं वहां ? क्या मैं उनसे बात कर सकती हूं फिर उसका दिल एकदम से बैठने लगा दरवाजा खोल कर उसका पति हाल के भीतर आ गया।

'राकेश यहां से चले जाओ उसने कुछ नाराजगी से कहा। फोन पर बात करते हुए कोई सुने तो मुझे बहुत बुरा लगता है।

वह हंस कर कुर्सी खींच कर बैठ गया।

पक्का तुम इस समय बुचर को ही फोन कर रही हो।

उसने पूछा।

निशा दुविधा में पड़ गई थी, उसका प्लैन फेल हो गया था, एक क्षण में ही देवेनराय फोन पर आ जाएगा। क्या वह किसी खतरे की परवाह किये बिना उसे खुलमखुल्ला मदद के लिये बोल दे।

और तभी जैसे ही घबराहट में उसने बटन को दबा उस छोटी रिसीवर में लगी चाबी को रिलीज किया। एक और तरकीब उसके दिमाग में कौंध गई।

'काम तो कठिन है', उसने सोचा, 'इसका मतलब है मुझे दिमाग ठंडा रख बड़े ध्यान से शब्दों का चुनाव करना होगा। साथ ही एक क्षण के लिये भी गड़बड़ाना नहीं होगा। पर मैं समझती हूं मैं यह काम कर सकती हूं। मुझे करना ही होगा।'

और इसी क्षण उसे दूसरी ओर देवेन का स्वर सुनाई दिया।

निशा ने एक लम्बी सांस ली। फिर उसने कस कर चाबी को दबाया और बोली।

'मैं मिसेज राकेश बोल रही हूं—बुल-बुल कुटी से, कृपया आना (और फिर उसने चाबी को छोड़ कहा) कल सुबह छः वील कटलेट लेकर (दुबारा उसने चाबी दबाई) यह बहुत ही जरूरी है (चाबी छोड़ वह बोली) धन्यवाद मि० हुंगल, आशा है आप मुझे इतनी देर में फोन करने के लिए क्षमा करेंगे। पर वे वील कटलेट वास्तव में एक (चाबी दबा वह बोली) जीवन और मरण की बात है (चाबी छोड़ वह बोली) बहुत अच्छा कल सुबह (चाबी दबा वह बोली) जितनी जल्दी हो सके।

उसने रिसीवर हुक पर रख दिया और लम्बी-लम्बी सांस लेते हुए अपने पति की ओर मुड़ी।

'तो तुम अपने बुचर से ऐसे बात करती हो, क्यों ?' राकेश बोला।

'यह जनाना पुट है।' निशा ने धीरे से कहा।

वह भीतर ही भीतर बहुत खुश थी, उसे कुछ भी सन्देह नहीं हुआ। देवेन, यदि कुछ समझा भी न होगा तो भी आयेगा अवश्य। वह बैठने वाले कमरे में पहुंची और बिजली जला दी, राकेश उसके पीछे ही था।

'अब तो तुम बहुत खुश दिख रही

हो।' वह उसे कुछ कौतुहल से देखता हुआ बोला।

'हां, निशा बोली, 'मेरा सिर दर्द ठीक हो गया।'

वह अपनी कुर्सी पर बैठ गई और अपने पति को देख मुस्कराई। राकेश उसके सामने ही अपनी रोजमर्रा की कुर्सी पर बैठ गया, उसकी जान बच गई। अभी केवल 8.25 ही हुए थे, नौ बजने से काफी पहले ही देवेन राय यहां पहुंच जायेगा।

राकेश ने शिकवा-सा करते हुए कहा 'मुझे वह काफी अच्छी नहीं लगी, बहुत ही कड़वी थी।'

'यह एक नया ब्रांड है जिसे मैं ट्राई कर रही थी। प्रिये यदि तुम्हें पसन्द नहीं तो फिर नहीं पियेंगे इसे।

निशा ने अपनी एक कढ़ाई उठाकर सीना शुरू किया। राकेश ने अपनी किताब के कुछ सफे पढ़े, फिर उसने घड़ी की ओर देखा और किताब एक ओर पटक दी।

'साढ़े आठ, तहखाने में जाकर काम शुरू करने का समय हो गया।'

सिलाई निशा के हाथ से फिसल गई।

'ओह ! अभी नहीं, नौ बजे तक रुक जाते हैं।

'नहीं, मेरी गुड़िया, साढ़े आठ का समय ही निर्धारित किया था मैंने। इसमें तुम्हें जल्दी सोने का मौका मिल जायेगा।'

'परन्तु मैं नौ बजे तक रुकना चाहती हूं।'

'तुम जानती हो, जब मैं कोई समय निर्धारित कर लेता हूं, मैं उस पर ही चलता हूं, चलो निशा, मैं एक मिनट भी और नहीं रुकूंगा।'

निशा ने राकेश की ओर देखा और स्वयं में विश्वास होते हुए भी भय की लहर उसके भीतर से निकल गई। नकाब उतर गया था, राकेश के हाथ बेचैन थे, उसकी आंखें चमक रही थीं, वह निरन्तर अपने सूखे होंठों पर जीभ फेर रहा था। वह अब अपने उत्साह को छिपाने का प्रयत्न भी नहीं कर रहा था। निशा ने सोचा, सच है—वह अब रुक नहीं सकता, 'वह पागल आदमी के जैसे है।'

वह निशा के करीब आया और उसे कंधे से पकड़ उठाकर खड़ा कर दिया।

'चलो डार्लिंग, वरना मैं तुम्हें उठा कर वहां ले जाऊंगा।

'उसका स्वर प्रसन्न था पर उसके पीछे एक बेनकाब तेजी थी जिससे वह डर गई। बड़ी हिम्मत कर वह उठी और दीवार से चिपक कर खड़ी हो गई। वह निस्सहाय थी, वह भाग भी नहीं सकती थी—वह कुछ भी नहीं कर सकती थी—और वह उसकी बढ़ रहा था।

'अब, निशा—'

'नहीं-नहीं।'

'वह अपने हाथ उसे अपने से दूर रखने के लिये उसकी ओर फैला, चीख उठी।'

'राकेश रुक जाओ, मुझे तुम्हें कुछ बताना है, कुछ स्वीकार करना है।

वह रुक गया।

'कुछ स्वीकार करना है ?' उसने कुछ हैरानी से पूछा।

'हां, स्वीकार करना है, उसने यह शब्द बिना सोचे-समझे ही कह डाले थे, पर अब वह उसका ध्यान अपनी बातों में लगाये रखने की भरसक कोशिश कर रही थी।

उसके चेहरे पर घृणा का भाव उभर आया।

'मेरे ख्याल से, कोई पहला प्रेमी है ? वह खीजता सा बोला।

'नहीं, निशा बोली, 'कुछ और ही बात है। तुम इसे मेरे ख्याल से, हां तुम इसे अपराध ही कहोगे।

और उसने तुरन्त देखा कि उसकी बात बिल्कुल ठीक बैठी है। फिर से उसका ध्यान आकर्षित हो गया था, यह देख उसकी हिम्मत फिर से वापिस आ गई। दोबारा स्थिति उसके हाथ में आ गई थी।

'मेरे ध्याल से तुम जरा बैठ जाओ, वह धीरे से बोली, 'वह स्वयं भी कमरा पार कर अपनी कुर्सी पर जाकर बैठ गई। उसने झुककर अपनी कढ़ाई भी उठा ली परन्तु अपनी बाहरी शांति की आड़ में वह बहुत ही तेजी से सोचकर कुछ नई बात बना रही थी। क्योंकि यह आवश्यक था कि उसकी कहानी राकेश का ध्यान तब तक के लिए अपने में लगाने वाली

मदहोश



होनी चाहिये, जब तक मदद आये।

मैंने तुम्हें बताया है वह बहुत ही धीरे-धीरे बोली, कि मैं पन्द्रह वर्ष तक शार्ट हैन्ड टाईपिस्ट रही हूं। वास्तव में यह पूरा सत्य न था, इसके बीच में दो बार रुकावटें आई थीं। पहली रुकावट तब आई थी जब मैं बाईस वर्ष की थी, मेरी भेंट एक पुरुष से हुई। एक बड़ी सी आयु के पुरुष से, जिसकी अपनी कुछ जायदाद भी थी। उसे मुझसे प्रेम हो गया और उसने मुझसे बिवाह करने की इच्छा प्रकट की मैंने विवाह करना स्वीकार कर लिया। हमारा विवाह हो गया। वह रुक कर बोली, 'मैंने उसकी जीवन बीमा पालिसी अपने हक में करवा ली।'

उसने देखा अचानक उसके पति की कहानी में दिलचस्पी जाग गई, जो उसके चेहरे पर झलकने लगी—वह और भी अधिक विश्वास के साथ आगे कहने लगी।

युद्ध के दौरान मैंने कुछ समय हस्पताल की डिस्पेंसरी में काम किया था। वहां मुझे हर प्रकार की अन-उपलब्ध औषधियों तथा जहरों के सम्भालने का काम करना पड़ता था।

वह रुक कर सोचने लगी, अब वह पूरी तरह कहानी में खो गया था। हत्यारे की हत्या में दिलचस्पी होनी स्वाभाविक ही है। उसने यही दाव खेला था और सफल हो गई थी। उसने घड़ी की ओर चुपके से निगाह डाली नौ बजने में पच्चीस मिनट बाकी थे।

'एक जहर होता है- जो एक सफेद पाउडर जैसा होता है। उसकी चुटकी का अर्थ होता है मौत। शायद तुम्हें भी जहरों के विषय में कुछ मालूम हो?'

'नहीं' राकेश बोला, 'मैं उनके विषय में बहुत कम जानता हूँ।' उसने राहत की सांस ली। निशा ने प्रश्न यह सोचकर किया था कि यदि राकेश को विषों की जानकारी होगी तो उसे होशियारी से काम लेना पड़ेगा।

'तुमने हायोसिन के बारे में तो जरूर सुना होगा। यह एक ऐसी औषधि है जो विष का ही काम करती है। परन्तु इसका पता नहीं लगाया जा सकता। कोई भी डाक्टर हार्ट फेल का सर्टिफिकेट दे सकता है। मैंने थोड़ी सी यही औषधि चुरा कर रख ली थी।'

उसने रुक कर प्रभाव भांपना चाहा।

'आगे क्या हुआ' राकेश ने पूछा।

'नहीं, मैं तुम्हें नहीं बता सकती। फिर कभी।

'अभी, वह बेचैनी से बोला, 'मैं सुनना चाहता हूं।'

'हमारे विवाह को एक माह हो गया था। मैं अपने अधेड़ पति से बहुत ही अच्छा व्यवहार करती थी बड़ा ही नम्र और प्यार भरा। वह सब पड़ौसियों से मेरी प्रसंशा किया करता था। सबको पता था मैं कितनी पतिव्रता हूं। हर शाम को मैं उसकी काफी अपने हाथ से बनाया करती थी। एक शाम को, जब हम दोनों थे, तो मैंने उसके प्याले में एक चुटकी उस घातक औषधि की डाल दी—

निशा रुक गई, और बड़े ध्यान से अपनी सूई पिरोने लगी। वह जिसने जीवन में कभी भी अभिनय नहीं किया था इस समय संसार की बड़ी से बड़ी अभिनेत्री को मात दे रही थी। वह वास्तव में एक निर्मम विषदाता का पार्ट अदा कर रही थी।

चारों तरफ सन्नाटा था, उसका अन्त बहुत ही शांतिपूर्ण था, मैं बैठ कर उसे देखती रही, एक बार उसे दम घूटता महसूस हुआ, उसने हवा के लिए कहा, मैंने खिड़की खोल दी। फिर वह बोला, वह कुर्सी से हठ नहीं पा रहा। तुरन्त ही वह मर गया।

उसने मुस्कराना बन्द कर दिया। नौ बजने में अब केवल पन्द्रह मिनट बाकी थे, वे अवश्य जल्दी ही आ जायेंगे।

'बीमे का पैसा कितना था' राकेश ने पूछा।

'लगभग दो लाख रुपये, मैंने जुआ खेला और सारा का सारा खो दिया। मैं वापिस अपने दफ्तर काम पर पहुंच गई। पर मेरा इरादा ज्यादा दिन वहां रुकने का नहीं था। फिर मुझे एक और आदमी मिला। मैंने अपना विवाह से पहले का नाम दफ्तर में रखा हुआ था उसे मालूम नहीं था कि पहले मेरा विवाह हो चुका था। यह एक नवयुवक था बहुत ही स्मार्ट और अच्छे पैसे वाला

शेष पृष्ठ ३० पर

बन्द करो बकवास



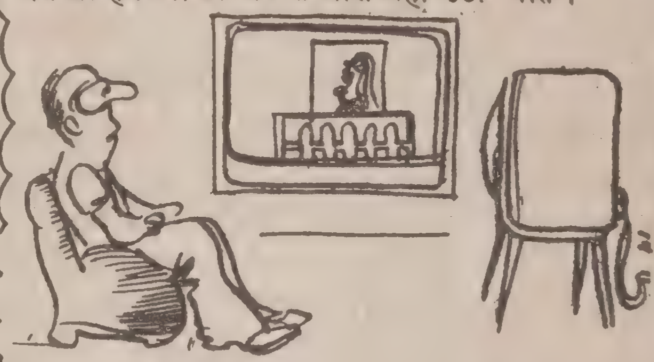
हमारे क्रिकेट प्रेम की दीवानगी के प्रमाण

हम क्रिकेट को दीवानगी की हद तक प्रेम करते हैं। हमारे क्रिकेट प्रेम के आगे लैला मजनूं की कहानी भी फीकी पड़ जाती है। हमारे इस क्रिकेट जनून के कुछ ज्वलंत प्रमाण।

हमारा बैट्समैन 90 रन बनाने के बाद एक-एक रन कर शतक की ओर बढ़ता है। हम उसके शतक की आशा में इतने खो जाते हैं कि अंगुलियों में पकड़ी सिगरेट जलती-जलती अंगुलियों का दाह संस्कार करके घर भी चली जाती है और हमें पता तक नहीं लगता।



गावस्कर और अरुण लाल फॉस्ट बॉलरों का आरम्भिक खतरनाक आक्रमण झेल रहे होते हैं। पड़ौसी की क्यूट लड़की रीटा खिड़की के सामने वाले छज्जे पर आकर गुनगुनाती है। कानों में गाने की आवाज आने पर भी हम टी. वी. पर से आंखें नहीं उठा पाते।



टैस्ट सीरीज खत्म होने के बाद ट्रांजिस्टर के स्पीकर के कवर वाले भाग पर हमें अपने कान के बराबर और कान के आकार का भाग दबा हुआ मिलता है जैसे ऐच किया गया हो।



हम जीवन की सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण बात का निर्णय भी क्रिकेट से जोड़ते हैं जैसे चित्र में देखिये, प्रेमिका के यह पूछने पर कि हमारी शादी कब होगी प्रेमी उत्तर दे रहा है। जब गावस्कर टैस्ट मैचों में 8000 रन पूरे करेगा तभी हम शादी करेंगे।



टैस्ट सीजन में सपनों में अमिताभ बच्चन तथा ऋषिकपूर की बजाय सुनील गावस्कर और इमरान दिखाई देने लगते हैं ।



भारत टैस्ट मैच हार जाता है तो इतना दुख होता है और संसार से इतनी विरक्ति होती है कि एक बार तो हम फैसला कर लेते हैं कि मोहमाया त्याग, सांसारिक बंधनों को तोड़, गेरुये कपड़े पहन, कमंडल लेकर हिमालय की ओर प्रस्थान किया जाये ।



प्रोबेशन की नौकरी और जल्लाद स्वभाव वाले बॉस के अधीन होने पर भी हम आफिस में क्रिकेट कमेंट्री सुनने से बाज नहीं आते । मेजों पर अर्जेन्ट फायलों के ढेर लग जाते हैं लेकिन कोई परवाह नहीं ।



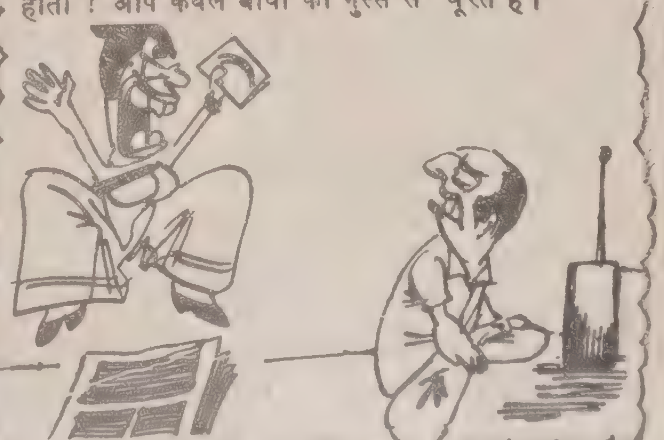
चाय पीते समय कोई महत्त्वपूर्ण भारतीय बैट्समैन आउट हो जाये तो हमें ऐसा धक्का लगता है कि खांसी चाय का सारा घूट श्रद्धांजली के रूप में बाहर फेंक देती है ।



टी.वी. पर टैस्ट मैच देखते-देखते हम पूरा खाना खा जाते हैं लेकिन हमें पता नहीं लगता कि श्रीमती जी दाल-सब्जी में नमक डालना भूल गयी थीं ।



हमारी टीम हारने की स्थिति में होती है । बैट्समैन खटाखट आऊट हो रहे हैं ! ऐसे में बीवी आकर चीखती है कि हमारी लाटरी निकल गयी ! दस लाख का प्रथम पुरस्कार आया है ! इसका आप पर कोई असर नहीं होता ? आप केवल बीवी को गुस्से से घूरते हैं ।



क्यों और कैसे

प्र० : क्या बाल एक रात में काले से सफेद हो सकते हैं।

उ० : 'औषधि विज्ञान की एक सबसे पुरानी समस्या की अभी तक खोज नहीं की जा सकी है. वह है, मनुष्य के बाल अचानक सफेद हो जाना। यह लिखा था त्वचा विशेषज्ञ लेनडोईस ने सौ वर्ष पूर्व, परन्तु आज भी यह उतनी है सच है।

इतिहास और कथाओं में ऐसे लोगों के किस्से भरे पड़े हैं जिनके अचानक किसी मानसिक धक्के अथवा परेशानी के कारण अचानक बाल सफेद हो गए थे। इन्हीं में एक हैं रानी मेरी ऐन्टोनेट फ्रांस की ! जिनके बाल मौत की सजा सुनाई जाने के तुरन्त बाद सफेद हो गए थे। लुई ड्यूक आफ बरन्सविक ने 13 वीं शताब्दी में अपनी पत्नी को बेवफा होने के जुर्म में मौत के घाट उतार दिया था, परन्तु जब उन्हें पता चला वह बेकसूर थीं तो अचानक उसके बाल सफेद हो गए। सन् 1546 में होली रोमन एम्पायर के राजा चार्ल्सपंचम् ने एक नौजवान को प्रलोभन के लिए मौत की सजा सुनाई, उसे सजा अगले दिन दी जानी थी, रात-रात में उसकी दाढ़ी और सिर के सारे बाल सफेद हो गए। राजा को यह देख इतना दुःख हुआ कि उसे माफी दे दी।

इसी प्रकार के सन् 1800 के बाद केस दो ग्रुप में बांटे जा सकते हैं। पहले ग्रुप में वे लोग आते हैं जिनके बाल किसी भारी मानसिक दबाव या डर के कारण अचानक सफेद हो गए थे ! अभी तक केवल 30 ऐसे रिकार्ड किए हुए केस पाए जाते हैं।

दूसरे ग्रुप में वह व्यक्ति आते हैं जिनके बाल भयंकर ओरगैनिक बीमारी के कारण सफेद हुए हैं। केवल दस ऐसे केस मेडिकल लिटरेचर में रिकार्ड किए गए हैं। इनमें से अधिकतर रोगी मानसिक रोग से पीड़ित पाये गये थे।

अभी तक की सारी मेडिकल रिपोर्टों में सबसे प्रख्यात सन् 1861 में एक ब्रिटिश सर्जन द्वारा लिखित केस है। यह केस एक बंगाली सिपाही का है जिसके बाल कैदी बनाये जाने के बाद केवल 30 मिनट में सफेद हो गए थे। पहले महायुद्ध के समय चार ऐसे केसों की रिपोर्ट थी। इनमें सबसे मशहूर एक महिला जासूस का था जो फ्रांसीसियों द्वारा पकड़ ली गई थी। गोली मार देने की सजा सुनाई जाने के बाद, उसके बाल रात-रात में पूरे सफेद हो गए थे।

परन्तु यह होता क्यों है ! किसी को भी पूरी तरह मालूम नहीं लेकिन लैनडोईस द्वारा दिए गए एक सिद्धांत को काफी मान्यता प्राप्त है। अचानक बालों की सफेदी बालों की परत में हवा के बुलबुले घुस जाने से हो जाती है, यह बुलबुले रोशनी में बाल को सफेद दिखाते हैं।

यह विचार माईक्रोस्कोपिक खोज से भी प्रमाणित किया गया है। बहुत से लोगों का ख्याल है कि हवा के बुलबुलों का सिद्धांत ही सबसे अच्छी व्याख्या है।

प्र० : सबसे पहला थरमामीटर कब बना था ?

उ० : सबसे पहला थरमामीटर या तापमान नापने का यन्त्र 16 वीं शताब्दी के अन्त से कुछ ही पहले बना था। इसके बनाने वाले थे प्रसिद्ध खगोलज्ञ गेलिलिओ। यह थरमामीटर केवल हवा से बना था जिससे गर्मी और ठंड की डिग्री का आम सा अन्दाजा लगाया जा सकता था। बाद में उन्होंने इसे और बेहतर बनाया जिसमें हवा के स्थान पर एलकोहल (शराब) का प्रयोग किया।

थरमामीटर के कार्य करने का सिद्धांत है कि नापने के लिए प्रयुक्त तरल या गैस तापमान में बदलाव आने पर अधिक जल्दी फैलता और सिकुड़ता है बजाय उस कांच के जिसमें उसे भरा गया है। इस प्रकार जब एक रंगीन तरल पदार्थ एक पतली कांच की निशान लगी ट्यूब या नली में भरा जाता है तो उसके बढ़ने का फर्क जैसा कि कांच की ट्यूब में दिखाई देता है निशानों के अनुसार तापमान बताता है।

लगभग सन् 1714 में जर्मन वैज्ञानिक गैबरैल डेनियल फेरनहीट ने पहली बार तापमान नापने के लिए पारे का प्रयोग किया था। उन्होंने अपने नाम पर ही नापने की प्रणाली या स्केल भी चालू किया जिसमें 32 डिग्री फेरनहीट पर पानी जम जाता है और 212 डिग्री पर उबलने लगता है। अब भी अधिकतर थरमामीटरों में पारे या मरकरी का ही प्रयोग किया जाता है। क्योंकि उसका उबलने का स्तर बहुत अधिक 674 डिग्री फेरनहीट और जमने का बहुत ही कम (—38 डिग्री) है।

एलकोहल का थरमामीटर अब भी बहुत से देशों में प्रयोग में लाया जाता है। इसका निर्माण सन् 1731 में फ्रांस के एक प्रकृति विज्ञाता रेने-डी-रेमर ने किया था। लगभग ग्यारह वर्ष बाद एक स्वीडिश खगोलज्ञ एन्डर्स सेलसियस ने सेन्टीग्रेड स्केल का पहली बार इस्तेमाल किया था। सेंटीग्रेड स्केल का जम जाने का पोइंट 0 डिग्री सेलसियस और उबलने का पोइंट 100 डिग्री सेलसियस है।

प्र० : कभी-कभी सर्दियों में पानी के पाईप फट क्यों जाते हैं।

उ० : ठंडे पानी के पाईप सर्दियों में तब ही फट सकते हैं जब बाहर का तापमान 0 डिग्री सेन्टीग्रेड या 32 डिग्री फेरनहीट से नीचे गिर जाता है। और पाईपों के भीतर का पानी जम कर बर्फ बन जाता है। पाईप की दीवारें फट कर पाईप पर बर्फ का दबाव कम करती हैं क्यों कि बर्फ को कम से कम पानी से प्रतिशत 0 अधिक स्थान की आवश्यकता होती है। एक क्यूबिक फुट पानी से 1.09 क्यूबिक फुट बर्फ बनती है। पाईपों में बर्फ न जमने देने के लिए पाइपों के ऊपर हीट इन्सूलेटर लपेट दिया जाता है।

पानी में कुछ अनोखे गुण हैं। पानी के जमने से फैलने के अतिरिक्त किसी भी पानी जैसे तत्व से अधिक गर्मी की आवश्यकता होती है पानी को गर्म करने के लिए। दूसरे शब्दों में पानी की स्पेसिफिक हीट अधिक है। प्रकृति में इन विशेषताओं के खास लाभ हैं। जैसे कि ठंडी सर्दियों की रातों में पानी के बर्फ बन कर फैलने के कारण, पानी से भीगे बड़े-बड़े मिट्टी के ढेले टूट जाते

खेल खेल में

क्रिकेट विश्वप्रसिद्ध, आलराऊंडर कपिलदेव व इमरान खां एक तुलनात्मक नजर

कपिल देव

(1) **गति** : अधिकतम करीब 120 किलोमीटर प्रति घंटा। गति में काफी विविधता लाने की क्षमता।

(2) **स्विंग** : इमरान के मुकाबले बेहतर स्विंग' गेंदबाजी करते हैं। इनकी 'आउट स्विंगर' बहुत ही बढ़िया होती हैं। विविधता के तौर पर बदली हुई गति की 'इन कटर' बल्लेबाज की कड़ी परीक्षा लेती है इनकी गेंदों का 'स्विंग' बहुत ही नियंत्रित होता है।

(3) **प्रमुख अस्त्र** : 'आउट स्विंगर्स के बीच में 'इनकटर' का बदली हुई गति पर चतुराईपूर्ण मिश्रण इन्हें बहुत ही मुश्किल गेंदबाज बना देता है।

(4) **बल्लेबाजी** : कपिल देव बहुत ही आक्रामक बल्लेबाज हैं। स्विंग गेंदबाजी को खेलने में सन् 1979 तक ये कमजोर थे। पर पिछले इंग्लैंड के दौरे में उन्होंने साबित कर दिया कि अब उनकी बल्लेबाजी काफी परिपक्व व विकसित हो चुकी है। लेकिन ये प्रत्येक गेंद को पीटते हैं। यानी गेंद को रोकने में ये भरोसा नहीं करते। इसी कारण इनकी बल्लेबाजी में सुनियोजित रक्षण का स्थान नहीं है। इनका 'ड्राइव' बहुत ही सशक्त व सही होता है। ऐसा कम ही होता है कि कपिल मैदान पर काफी देर टिके हों, तो छक्के देखने को नहीं मिले। गेंदबाज की प्रतिष्ठा का कपिल देव पर कोई असर नहीं होता।

(5) **क्षेत्ररक्षण** : कपिल देव एक सुरक्षित व भरोसेमंद क्षेत्ररक्षक हैं साधारणतया पीछे कहीं लांग लेग, डीप स्क्वेअर लेग पर खड़े मिलेंगे।



कपिल देव

इमरान खां

(1) **गति** : करीब 130 कि. मी. प्रति घंटा। दुनिया के सबसे तेज गेंद बाजों में से एक, थॉमसन होल्डिंग रॉबर्ट्स व विलिस के बाद इमरान का ही नंबर आता है।

(1) **स्विंग** : स्विंग ज्यादा नहीं करते। जाहिर भी है क्योंकि 130 किमी. प्रतिघंटे की रफ्तार वाली गेंदें ज्यादा स्विंग कैसे होंगी। नियंत्रित स्विंग के लिए गति तो कम करनी ही पड़ती है।

(3) **प्रमुख अस्त्र** : थोड़े से 'शॉर्ट आफ लेंथ. से गेंद को अनायास कंधे से ऊपर उठा सकने की योग्यता इन्हें बहुत खतरनाक गेंदबाज बना देती है। इस माने में ये थामसन, राबर्टस व विलिस से ज्यादा खतरनाक गेंदबाज हैं। केवल होल्डिंग ही इस मामले में इमरान का मुकाबला कर सकते हैं।

(4) **बल्लेबाजी** : इमरान की बल्लेबाजी उपयोगी व चुनौतीपूर्ण कही जा सकती है। हालांकि इनकी बल्लेबाजी में सुनियोजित रक्षण को स्थान है, फिर भी आज मैं कपिलदेव को इमरानखां के मुकाबले बेहतर बल्लेबाज मानता हूं। इमरान में उस निर्दयता से गेंदबाजी के चिथड़े उड़ा देने की क्षमता नहीं है, जो कपिल देव में है। इमरान को गेंदबाज खामोश रख सकता है पर कपिल देव के बल्ले को भूखा रखना नामुमकिन है। मेरे ख्याल से, इमरान स्पिन गेंदबाजी को ज्यादा अच्छी तरह से खेल सकते हैं, बजाय तेज गेंदबाजी के।

(5) **क्षेत्ररक्षण** : इमरान भी एक क्षेत्ररक्षक हैं। इस माने में वे कपिल से पीछे नहीं हैं। ●



इमरान खा

←

हैं जिससे खेतों में की बसंत में बुवाई के लिए मिट्टी उपयुक्त हो जाती है।

पानी की अधिक स्पेसिफिक हीट का अर्थ है कि समुद्र धरती से ज्यादा समय में गर्म होता है और पृथ्वी से ज्यादा ही समय लगता है समुद्र के ठंडा होने में, इस प्रकार समुद्र मौसम को तीखे बदलावों से बचाता रहता है। यही कारण है कि समुद्र के किनारे बने शहरों में मौसम अधिकतर सामान्य रहता है। ●



भगवान का केन्द्रीय सचिवालय

हम सरकारी दफ्तरों को विभिन्न प्रकार के पत्र लिखते हैं और उनके पत्रों के उत्तर पाते हैं। अगर भगवान को की जाने वाली प्रार्थना भी उसी प्रकार भगवान के दफ्तर को पत्रों व फार्मों द्वारा भेजी जाने लगे तो वह पत्रव्यवहार कैसा होगा? उसी की कल्पना इस फीचर में की जाती है। पढ़िये और पत्रव्यवहार का आनन्द उठाइये।

सेवा में,

कृपानिधान भगवान,
स्वर्ग.

हे सर्वशक्तिमान,

मुझे विश्वस्त सूत्रों से ज्ञात हुआ है कि अब स्वर्ग में 28% जगहें पिछड़े वर्गों के भक्तों के लिये सुरक्षित की जा रही हैं। क्या यह सूचना सही है? कृपया उत्तर दें!

आपका सेवक
ज्ञान प्रकाश कुर्मी
जेपी. बाजार
14-12-82 पटना

केन्द्रीय ॐ सचिवालय

ब्रह्मांड संचालक सर्वशक्ति मान भगवान
मोक्ष मार्ग, स्वर्ग. (पिन. 10008)

क्रमांक................. तिथि 1-1-83

विषय-पिछड़े वर्गों के लिये
सुरक्षित जगहें

महोदय,

आप यह जान कर प्रसन्न होंगे कि भगवान जी के कैबिनेट में शंकर व ब्रह्मा जी के सिफारिश पर इसी आशय का प्रस्ताव विचाराधीन है। कैबिनेट द्वारा फैसला होते ही आरक्षण का नियम लागू हो जायेगा। भगवान पिछड़े वर्गों की भलाई के लिये कृत संकल्प हैं।

शुभेच्छा सहित। आपका
मंदाकणफसूट
निजी सचिव
भगवान

सेवा में,

सर्वशक्तिमान भगवान
केन्द्रीय सचिवालय,
मोक्ष मार्ग, स्वर्ग.

हे अन्नदाता,

कहते हैं कि दाने दाने पर खाने वाले का नाम लिखा होता है। 23 दिसम्बर और 25 दिसम्बर 1982 को भूखा रहा मुझे खाना नहीं मिला। उस दिन की मेरे नाम के मोहर वाले दाने कहाँ गये?

मुझे इस बात का जवाब दिया जाये।

भवदीय
26-12-82 मंगलूराम भिखारी
कनाट प्लेस
नई दिल्ली

केन्द्रीय ॐ सचिवालय

ब्रह्मांड संचालक सर्वशक्ति मान भगवान
मोक्ष मार्ग, स्वर्ग. (पिन. 10008)

क्रमांक......... तिथि...... 8-1-83

विषय—दाने दाने पर मोहर

महोदय,

हमें खेद है कि आपको भूखा रहना पड़ा। आपको यह जान कर खुशी होगी कि हम शीघ्र ही देवताओं की एक उच्च विशेषाधिकार प्राप्त जाँच कमेटी बना रहे हैं जो यह खोज करेगी कि आपके नाम के दाने कहाँ हैं।

जैसे ही कमेटी रिपोर्ट देगी फौरन उचित कार्यवाही की जायेगी।

आपका
इन्द्रदेव
अध्यक्ष दाना पानी विभाग
हस्ताक्षर

सेवा में,

भगवान जी,
मोक्षमार्ग,
स्वर्ग.

हे दयालु,

मैं हर वर्ष सत्यनारायण की कथा करवाता हूं। मुझे विश्वस्त सूत्रों से पता लगा है कि इस कथा के करवाने वालों के लिये स्वर्ग में जगह सुरक्षित हो जाती है।

कृपया मुझे यह बताया जाये कि मुझे किस टाइप का और कौन से नम्बर का फ्लैट एलाट किया गया है ?

आपका आभारी हूंगा !

भवदीय
13-12-82 संत राम सेवक
रोहतक

केन्द्रीय ॐ सचिवालय

ब्रह्मांड संचालक सर्वशक्ति मान भगवान
मोक्ष मार्ग, स्वर्ग. (पिन. 10008)

क्रमांक.........
दिनांक 19-12-82

महोदय, विषय—फ्लैट एलाटमेन्ट

आपको सूचित किया जाता है कि फ्लैटों की संख्या से अधिक प्रत्याशियों के होने के कारण स्वर्गीय शासन ने लाटरी द्वारा फ्लैट एलाट करने का फैसला किया है। लाटरी में भाग लेने के लिये आप फर्स्ट क्लास मंदिर के पुजारी द्वारा एटैस्ट किया एप्लीकेशन फार्म भर कर भेजें। लाटरी का परिणाम जानने के लिये अपना ऐड्रेस लिखा तथा टिकट लगा लिफाफा भेजिये।

आपका
अध्यक्ष स्वर्ग
डवेलेपमेंट अथार्टी

भगवान जी अंकल,

मैं 6 वर्ष की लड़की हूं। मम्मी कहती हैं कि आप सब जगह हैं और सब कुछ देखते हैं लेकिन किसी को दिखाई नहीं देते। आप किसी के सामने क्यों नहीं आते ? मुझे सब पता है आप के चेहरे पर चेचक के दाग होंगे इसीलिये आप सामने आते सरमाते हैं।

मेरी टीचर कल बता रही थीं कि दिल्ली में कई हास्पीटल हैं जहां प्लास्टिक सर्जरी से चेहरे के दाग वगैरा मिटाये जा सकते हैं। आप चुपचाप मुझे बता दें तो मैं डैडी से पूछ उन सारे हस्पताल का पता आप को बताऊंगी।

आपकी
पम्मी

केन्द्रीय ॐ सचिवालय

ब्रह्मांड संचालक सर्वशक्ति मान भगवान
मोक्ष मार्ग, स्वर्ग. (पिन. 10008)

क्रमांक.........
दिनांक 3-1-83

विषय—प्लास्टिक सर्जरी.

प्रिय पम्मी, मुझे तुम्हारा पत्र मिला। तुम्हें यह गलत फहमी हुयी है कि मैं चेचक के दागों के कारण सामने नहीं आता। सच यह है कि काम की अधिकता के कारण मुझे दर्शन वगैरह देने की फुर्सत नहीं मिलती। सारे ब्रह्मांड की फायलें निबटाने में सारा समय लग जाता है।

शुभचिन्तन के लिये धन्यवाद।

तुम्हारा
हस्ताक्षर लक्ष्मी
प्राइवेट सेक्रेटरी
[फार भगवान]

सेवा में,

सर्वशक्तिमान भगवान,
केन्द्रीय सचिवालय,
मोक्ष मार्ग, स्वर्ग.

हे दयालु,

मेरी प्रार्थना है कि मेरी शादी को आठ वर्ष हो गये परन्तु मेरी कोख सूनी है ! मैंने पुत्रकांक्षा से सारे तीर्थों की यात्रा की, सारी मनौतियां मानीं लेकिन फल नहीं मिला।

मेरी सूनी कोख शीघ्रतिशीघ्र भर दी जाये !

धन्यवाद !
प्रार्थिनी,
कौशल्या देवी,
230 रामाकृष्णपुरम
12-2-82 नई दिल्ली।

केन्द्रीय ॐ सचिवालय

ब्रह्मांड संचालक सर्वशक्ति मान भगवान
मोक्ष मार्ग, स्वर्ग. (पिन. 10008)

क्रमांक.........
तिथि 19-2-82

विषय—सूनी कोख

महोदय,

आपका दिनांक 12-2-82 का लिखा पत्र मिला। हम आपकी प्रार्थना पर विचार करने में असमर्थ हैं क्योंकि आपकी अर्जी के साथ एम. बी. बी. एस. डाक्टर का कोख सूनी होने का सार्टिफिकेट संलग्न नहीं है। आप सर्टिफिकेट के साथ प्रार्थना पत्र भेजिये।

धन्यवाद।

आपका
प्रथम सचिव

सेवा में,

सर्वशक्तिमान भगवान
केन्द्रीय सचिवालय
मोक्ष मार्ग, स्वर्ग.

ओ गॉड

मैं B. A. फाइनल की परीक्षा में उत्तीर्ण होने के लिये परीक्षा के दिनों लगातार एक महीने सुबह-सुबह मन्दिर जाकर मत्था टेक आता था लेकिन परीक्षा फल में मेरा रोल नम्बर नदारद है। मुझे मत्था टेकने का फल क्यों नहीं दिया गया? यह अन्याय क्यों?

उत्तर की प्रतीक्षा में

11-11-82

प्रार्थी
बनवारी लाल 'सुमन'
स्टूडेंट, बी. ए. आनर्स

'दीवाना तेज कार्यालय,
बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली.

2-1-83

सेवा में—
भगवान
केन्द्रीय सचिवालय, स्वर्ग 10008

प्रिय महोदय,

दीवाना पत्रिका से तो आप परिचित ही होंगे। हम आप पर एक फीचर छापना चाहते हैं तथा दीवाना के बैक कवर के अन्दर वाले पृष्ठ पर आपका फोटो भी छापना चाहेंगे।

इन्टरव्यू तथा फोटो के लिये हमारे पत्रकार पोपट लाल तथा फोटोग्राफर ज्ञानचन्द्र को स्वर्ग के पास ईशु कीजिये तथा भगवान जी की सुविधानुसार एपाईटमैन्ट का समय निर्धारित करें।

हम आपके अभारी होंगे। आपका सेवक

हस्ताक्षर
सम्पादक दीवाना

सेवा में, भगवान जी.
धन्य हो स्वर्ग 10008

मैं एक 29 वर्ष की कुआरी कन्या हूँ। ज्योतिषी ने मेरे हाथ की रेखायें देख कर बताया था 20 वर्ष की आयु में मेरी शादी होगी। नौ वर्ष उस नियत तिथि को गुजर गये अब तक मेरी शादी नहीं हुई।

क्या मुझे आप का दफ्तर इस गड़बड़ी का संतोषजनक उत्तर दे सकता है?

शीघ्र उत्तर के लिये अभारी हूँगी।

आपकी

1-12-82

नैना देवी
अम्बाला

केन्द्रीय ॐ सचिवालय

ब्रह्मांड संचालक सर्वशक्ति मान भगवान
मोक्ष मार्ग, स्वर्ग. (पिन. १०००८)

क्रमांक········ तिथि 11-12-82

विषय—बी. ए. परीक्षाफल

महोदय,

आपका दिनांक 11-11-82 का पत्र मिला। आपके पत्र से सम्बन्धित फायल का अध्ययन किया गया है। आपके मत्था टेक वाले रिकार्ड कार्ड पर सर्वशक्तिमान भगवान के निजी गुप्तचर सेवा विभाग ने टिप्पणी की है कि मन्दिर में आप मत्था टेकने से ज्यादा मन्दिर आई सुन्दर कन्याओं से आँखें लड़ाने में ध्यान देते रहे थे। इसके लिये आपके क्लेम को झूठा माना गया है।

आपका
हस्ताक्षर
रिकार्ड सुपरवाइजर
केन्द्रीय सचिवालय

केन्द्रीय ॐ सचिवालय

ब्रह्मांड संचालक सर्वशक्ति मान भगवान
मोक्ष मार्ग, स्वर्ग. (पिन. 10008)

क्रमांक-442/ 778 तिथि—13-1-83

विषय—अनुसार आपके पत्र नं० -727- 420
दिनांक 2-1-83

प्रिय महोदय,

आपको सूचित किया जाता है कि भगवान जी फोटो नहीं खिचवाते तथ किसी प्रकार का इंटरव्यू नहीं देते। धरती के जीवित प्राणियों को स्वर्गलोक के पास ईशु करने का कोई नियम नहीं हैं।

आपका, हस्ताक्षर
प्रथम निजि सचिव
भगवान

केन्द्रीय ॐ सचिवालय

ब्रह्मांड संचालक सर्वशक्ति मान भगवान
मोक्ष मार्ग, स्वर्ग (पिन. 10008)

क्रमांक········ दिनांक 11-12-78

महोदय, विषय—शादी की रेखा

यह पत्र आपके पत्र दिनांक 1-12-82 के जवाब में है। हम खेद के साथ सूचित कर रहे हैं कि जिन देवता के पास आपकी सेवाओं का रिकार्ड है वह तीन महीने से मेडीकल लीव पर गये हुये हैं। जब वह लौट आयेंगे तो रिकार्ड की जाँच पड़ताल कर आपको सूचना दी जायेगी।

आपका
हस्ताक्षर
इंचार्ज, रिकार्ड सैक्शन

फैण्टम - गुमनाम कमाण्डर





छोड़ना चाहता है, हा हा—हो हो···
इसमें कौन-सी हँसने की बात है ? मुझे नहीं मालूम था इस काम में हत्या होगी ।
क्या कोई हत्या हुई थीजाकाल ?
हमें क्या मालूम, हम तो उन्हें छोड़ आये थे
जंगल का सबसे बड़ा लाभ··· कोई कानून नहीं और शेर बचे-खुचे चिन्हों का ध्यान रखते हैं ।
ललोनी के बेटे । तुम 'गुरु को कब्र में जाकर ही छोड़ सकते हो । समझे ?
जाकाल तुम्हें इसलिए लाया है क्योंकि तुम्हें जंगल की राहें मालूम हैं । हमें उनका प्रयोग करने वाले व्यापारी मालूम हैं ।
मैं अब भी जाना चाहता हूं, मैंने बहुत कुछ देख लिया ।
FALK & BARRY 12/23
©1980 King Features Syndicate Inc. World rights reserved
जाकाल क्या तुमने इसे 'दवाई' नहीं दी ?
हां ! खत्म हो गई ।
इसे दुछत्ती में लेजाओ और एक पाइप दो ।
हाँ ।
?
वाटरफ्रन्ट का यह सबसे सकील सेलून होता था ।
FALK & BARRY 12/24
अब भी है ।
यहां कुत्ते लाना मना है, हटाओ इसे ।
यह कुत्ता नहीं है, भेड़िया है ।
मैंने तुम्हें इस कूड़े को बाहर ले जाने को कहा न ।
लात मारना भूल है । पकड़ लो ।
पहाड़ी भेड़िया १७५ पाउंड का ।
उउह···

इम्पोर्टेरिया रेस्तरां

के० पी० सक्सेना

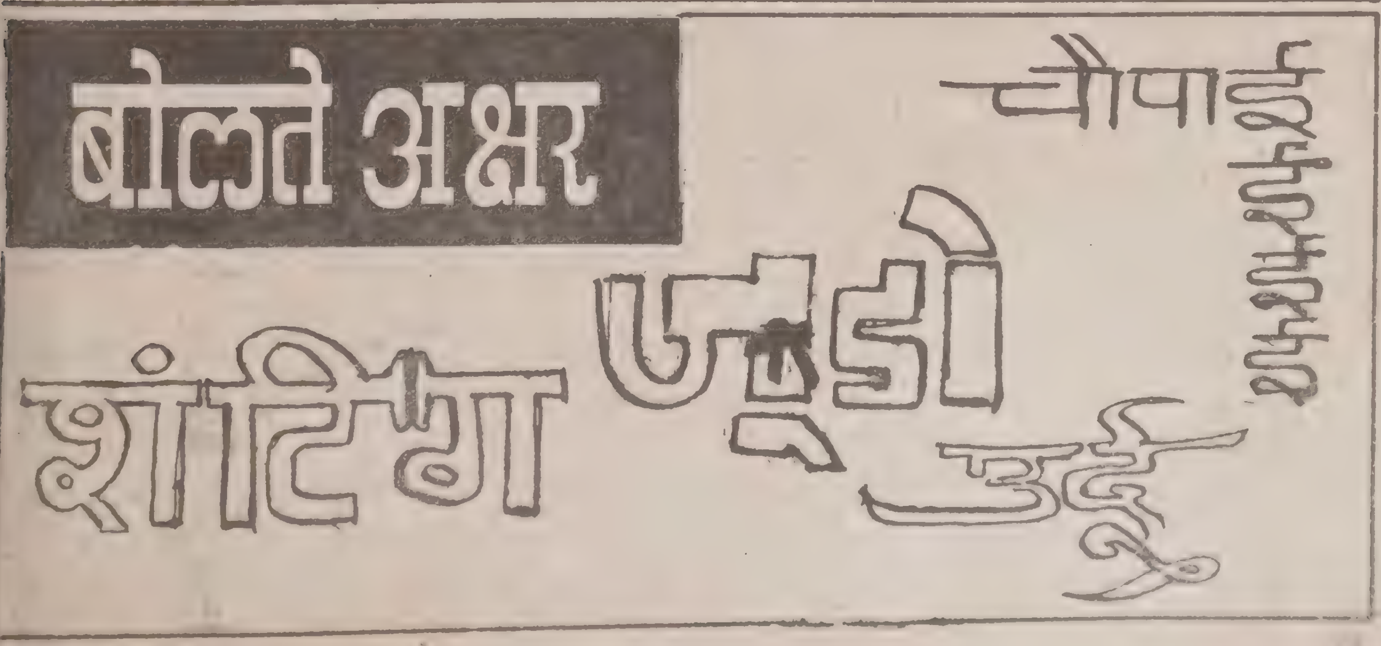
जिन दिनों हम बेकारी की भट्टीं में, दानों की तरह भुन रहे थे ? हमारी मुलाकात एक पागल पेंटर से हुई। पेंटर को नये-नये ब्रुश जमा करने का शौक था। हमने घर के तीन अदद अधघिसे झाड़ू उसे सप्रेम भेंट कर दिए। उसने भारतीय देवताओं की भाँति प्रसन्न होकर कहा, 'माँगो, क्या माँगते हो ?''

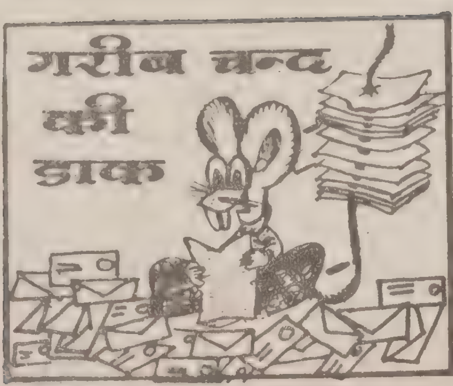
बेकारी को बहिश्त में बदलने की एक स्कीम, एक अर्से से हमारे खब्ती दिमाग में थी। लेकिन, हम चाहते यह थे कि बिना पैसा-अधेला लगाए बिजनेस जमाया जाए। अतएव हमारे मुँह से निकला, 'पेंटर भाई ! हमें दो दर्जन सॉइन-बोर्ड तो लिख दो !' मेहनत, खर्च और कष्ट की परवाह किए बिना, उस शहीद ने तुरन्त 'तथावस्तु' कहा, और पवनसुत हनुमान की तरह, 'पेंटिंग का सामान-रूपी संजीवनी लेने उड़ गया ! पेंटर को लेकर, हम शहर से थोड़ी दूर, बाहर चले गए। यह स्थान हमारे शहर की लोकप्रिय सैरगाह का काम देता था। इसके निकट ही, सैकड़ों वर्षों से उजड़ा, एक खण्डहर मौजूद था। हमारी तिजारती-निगाह इसी वीराने, 'भुतहे' और पूर्णतया उपेक्षित खण्डहर पर थी। हमारे दादा जान हाल ही में धरती छोड़कर, सुरपुरी सिधारे थे। वे अपनी विलायती वसीयत में, एक 'एडीसन'-कालीन ग्रॉमफोन, 'ग्रॉहमबेल' कालीन, तीन टाँग की लोहे की कुरसियाँ, बिना सुइयों की घड़ियाँ, पीला हुक्का, पंखहीन पंखे और अन्य जंग लगा सामान, हमारे नाम छोड़ गए थे। लगभग पौने तीन सौ की, नकद रकम भी छोड़ गए थे एक रिटॉयर डॉक-घर में। हमने इन सभी प्राचीन चीजों को, मॉडर्न रंग में रंगने का निश्चय कर लिया—हालाँकि कबाड़ी भाई वसीयत की सारी 'चल-सम्पत्ति' सत्रह रुपयों में खरीद रहे थे।

हमने पेंटर को तीन दिन 'चूसने' के बाद, विदा किया। एक दिन सामान सजाने-लगाने में लगा। पाँचवें रोज हमारे 'इंपोर्टेरिया-रेस्तराँ' का रंगीन सॉइन बोर्ड पढ़कर, हमारे इंपोर्टेड समोसों और इंपोर्टेड चाय पर, सैरगाह के लोग टूट पड़े ! हमारे लिए ऑर्डर पूरे करने मुश्किल हो गए ! बंदरों की गंदगी, खण्डहर के बिखरे पत्थरों तथा बहुरंगे सॉइनबोर्डों से, प्रकृति-प्रेमी ग्राहक धन्यवादी हो गए। वे जोर-जोर से बोर्ड पढ़ रहे थे : 'यहाँ हर वस्तु विदेशी है।' 'यहाँ समोसे इंपोर्टेड कड़ाही में बनाए-तले जाते हैं।' 'यह सारा फर्नीचर गोरों के वक्त का, यानी इंपोर्टेड है !' 'यह पंखा इंपोर्टेड है।' लोग प्राचीन ग्रॉमोफोन के शहीदशुदा हिस्सों और 'डिस्क' पर धरे प्राचीन रिकॉर्डों के टुकड़ों को, नयी दुल्हन की तरह, छू-छूकर देख रहे थे। वे इंपोर्टेड वस्तुओं की लंबी उम्र, खूबियों और बढ़ती तस्करी पर, बहस कर रहे थे; और धड़ाधड़ चाय-समोसे डकार रहे थे। शहर के सबसे गन्दे और सस्ते (काने) हलवाई बखिया के, तमाम रेडीमेड समोसे बटोरकर, हमने 'कॉकरोच पूर्ण' 'इंपोर्टेड-समोसे' वाली पेटी में, डाल रखे थे। लंबी सैर से थके-हारे सैलानियों से हम मनमाने दाम वसूल कर रहे थे चाय और समोसों के ! शौकीन लोग इंपोर्टेड हुक्के के कश भी ले रहे थे। कई बिना तार के पंखे को उंगली से घुमाकर, खुश हो रहे थे। लंगड़ी कुरसियों पर हाथ फेर रहे थे।

मोमबत्ती के पीले प्रकाश में, पहली रात हमने अपनी आमदनी का हिसाब लगाया, तो उछल पड़े ! हमने कुल पचास रुपये व्यय किए थे; मगर आमदनी तीन सौ से ऊपर हो रही थी ! हमने दिवंगत दादा और पागल पेंटर को दुआएँ देते हुए, सारे 'इंपोर्टेड सामान' की 'अस्थाई' बोरी पीठ पर लादी, तो हमारे शहर के सबसे बड़े सेठ मटरूमल ने, हमारे सिर पर हाथ फेरकर कहा, 'शाबाश, नौजवान ! हमारे देश को तेरे-जैसे होनहार व्यापारियों की ही जरूरत है ! इस भुतहे इलाके में भी, तुमने ग्राहकों की 'सही रग' पकड़ ली है !'

इतना कहकर, सेठजी ने जेब में हाथ डालकर कहा, 'अब बेटा, या तो मुँह-माँगी 'पगड़ी' पर 'इंपोर्टेरिया रेस्तराँ' मुझे सौंप दो, या मुझे ही अपना पॉर्टनर बना लो ! हम इस रेस्तरां को 'फॉइव-स्टॉर' स्टैण्डर्ड तक ले जा सकते हैं !'





उद्धव कुमार, गंज ग्वालियर :
मोटू-पतलू बिना दीवाना,
लगता बिल्कुल फीका।
बहुत दिनों से मिले नहीं वो,
किससे कहें दुःख जी का ?
कब तक पोंछ रहे, बतला दो,
ये कलंक का टीका ?
जिस दिन उनसे मिलेंगे,
फिर से, दिया जलेगा घी का ?

उ० : मोटू-पतलू फिर से छप रहा है। आप जिस घी का दिया जलाने वाले हैं उससे देसी घी का परांठा बना कर खा सकते हैं।

राजेन्द्र बठला, कलानौर : इन्सान को जिन्दगी से कब नफरत होती है ?

उ० : जब जिन्दगी में प्यार करने लायक कुछ न हो।

गुलशन पामार, आजाद भवन, मुक्तसर पंजाब : लीडर जनता की नजरों से कब गिर जाता है ?

उ० : जब उसकी करतूतों पर से पर्दा उठ जाता है।

गुरमीत सिंह मीता नई दिल्ली : आशिक और चोर में क्या अन्तर है ?

आशिक जूते खाता है और चोर जेल की हवा खाता है।

शिव चन्द्र खुराना लुधियाना : अंकल जी हर काम में औरतों को ही पहला स्थान क्यों दिया जाता है।

उ० : ऐसी बात तो नहीं। लड़ाई के मोर्चे पर जाने का काम ही लो।

प्र० : अंकल जी प्रेमिका का गुस्सा कब अच्छा लगता है ?

उ० : जब आपको पक्का विश्वास होता है कि गुस्सा नकली है।

परमजीत सुलेच 'पम्मी', करनाल : बचपन में मां सुलाती है, बुढ़ापे में मौत तो जवानी में…?

उ० : जवानी में थकावट सुलाती है।

तन्नू भाई नन्नू भाई, हापुड़ : हमें आप बतलाये कि शेख चिल्ली के पिता का क्या नाम है ?

उ० : अगर हमने उसका नाम ले लिया तो खाना ही नहीं मिलेगा।

पंडितमेवालाल परदेशी 'महोबा' : आप सवाल का जवाब 'जोश' में देते हैं या होश में देते हैं ?

उ० : न जोश में न होश में। हम सवाल का जवाब हिन्दी में देते हैं।

एस० एम० खान हुसैन गंज, लखनऊ : प्यारे गरीब चन्द वल्द अमीर चन्द जी, हमारे घर में रहने वाली कुमारी चुहिया देवी 'दीवाना' में आपकी फोटो देखकर



आप पर आशिक हो गयीं हैं।

एस. चस. खान, लखनऊ : आपके वियोग में उसने खाना-पीना छोड़ दिया है आप तैयार हों तो मैं शादी की तैयारी करूं।

उ० : क्या उससे शादी करवा कर मेरा खाना-पीना हराम करवाना है।

जगदीश तेजवानी, मन्दसौर : मैंने करीब 8 माह पहले 'दीवाना फ्रेंडस क्लब' में फोटो भेजा था, अभी तक प्रकाशित नहीं हुआ। क्या आप उसे कुतर गए हैं ?

उ० : आप जगदीश तेजवानी की जगह गीता तेजवानी होते तो मैं आपकी फोटो जरूर खा गया होता।

अरविन्द केवलानी 'आकाश', कटनी : आजकल गरीब चन्द जी आपका गणेश जी के यहां आना-जाना बंद हो गया है क्या ?

उ० : गणेश जी ने अब स्कूटर खरीद लिया है।

हरीश सिंह मिरोला, बागेश्वर अलमोड़ा : अगर सृष्टिकर्त्ता ब्रह्मा जी ने सृष्टि की रचना करते समय आपकी पूंछ नहीं बनाई होती तो, आप इतने ढेर सारे पत्र कहां रखते।

उ० : हमारे दफ्तर में रद्दी की टोकरियों की कमी नहीं है ?

अनिल दुर्गा, रायपुर : आखिर आपकी दादागिरी कब तक चलेगी ?

उ० : जब तक चाचागिरी और बेटागिरी का रिवाज नहीं चल निकलता।

मनोज कुमार गर्ग, मोहन नगर (राज) : झूठ कब बोलना चाहिए ?

उ० : जब सच बोल कर भूखों मरने का इरादा दिल से निकल जाये।

सुमन लता वर्मा नवाब गंज, गाजीपुर : आधुनिकयुग के पुरुष वर्ग नारी जाति को कमजोर समझते हैं। और नारियों की थोड़ी सी सहानुभूति पर पुरुषों की नियत खराब हो जाती है अर्थात गलत दृष्टि से देखने लगते हैं। क्या कारण है ?

उ० : दूसरों की कमजोरियां देख कर मजबूरी का फायदा उठाना पुरुष वर्ग का स्वभाव है।

नरेश अरोडा 'विक्की', जीन्द : मोहब्बत की मार और चप्पलों की मार में क्या अन्तर है ?

उ० : यह दो एक ही सिक्के के दो पहलू हैं।

प्रेम बाबू शर्मा, बगीची पीरजी : गरीब चन्द जी, प्यार के प्यासे आदमी तथा शराबी में क्या फर्क है ?

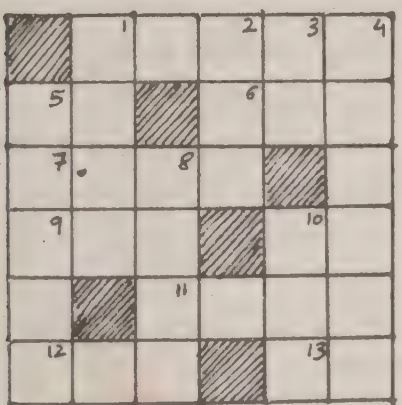
उ० : एक को नहीं मिल रही है और दूसरे को मिल गयी है।

राजेन्द्र सिंह बेदी, सितारगंज नैनीताल : गरीब चन्द जी, क्या आप भूतों से डरते हैं ?

उ० : हम तो खुद आप लोगों के कपड़े काट उन्हें भूतों की यूनीफार्म जैसा बना देते हैं। हम क्यों डरने लगे ?



वर्ग पहेली १० रु. इनाम जीतिये



संकेत

बायें से दायें

1. बिना दूल्हे के तमाशा शुरू होने लगे तो लगातार ही होगा। (5)
5. मकबरे के अन्दर जाकर समय पूछो। (2)
6. सुबह लाल तार में छुरी छुआने पर झटका नहीं लगेगा। (3)
7. मैं और आप मिलकर लौटते में शराब चढ़ा लें तो जख्म भर जायेंगे ? (4)
9. राशि को उल्टे पढ़ो। (3)
10. प्राणी किसके सहारे जमीन पर खड़ा रहता है। (2)
11. इसके होने पर रौब पड़ता है। (4)
12. दसवीं। (3)
13. खाने में जरा जीरा डालने में किसी को शिकायत नहीं होनी चाहिए (2)

ऊपर से नीचे

1. अकबर के साथ दुर्घटना होने पर कौन सा खनिज मिला। (4)
2. उसके व हमारे मिलने पर पैदा हुआ भ्रम। (3)
3. नीचे से ऊपर टपकने वाला। (2)
4. तरल बाबाजी को तोड़कर प्रतियोगिता का खेल बनायें। (6)
5. छाती से नीचे का भाग खुला न रहे तो दीवार पर चढ़ने में मदद मिलेगी। (5)
8. बाद में सुट्टा लगाने वाले साथी। (4)
10. कम खुरदरा माल थोक के हिसाब से नहीं मिलता। (3)

अन्तिम तिथि 19-2-83

नाम ————————————————

————————————————

पता ————————————————

————————————————

पृष्ठ १७ से आगे

हमने चुपचाप पूना में विवाह कर लिया। वह जीवन बीमा नहीं कराना चाहता था परन्तु उसने मेरे नाम वसीयत लिख दी थी। उसे भी मेरे हाथ की काफी पसंद थी जैसे मेरे पहले पति को पसंद थी।'

निशा जायजा लेती हुई मुस्कराई और साधारण तौर से बोली, 'मैं काफी बहुत अच्छी बनाती हूं।'

फिर वह आगे बताने लगी।

'हम जिस गांव में रह रहे थे वहाँ मेरे बहुत से मित्र थे। वे मेरे लिये बहुत दुखी थे क्योंकि एक दिन रात्रि के भोजन के बाद अचानक मेरे पति का हार्ट फेल हो जाने से मृत्यु हो गई थी। मुझे डाक्टर ज्यादा पसन्द नहीं आया था। मेरा ख्याल नहीं है कि उसे मुझ पर सन्देह था। पर मेरे पति की अचानक मृत्यु से वह हैरान अवश्य था। मुझे नहीं मालूम मैं फिर वापिस दफ्तर क्यों पहुंच गई। शायद आदतन! मेरे दूसरे पति का करीब चार लाख रुपया था, इस बार मैंने सट्टा नहीं खेला बल्कि उसे ब्याज पर लगा दिया। फिर तुमने देखा—

परन्तु उसे रुकना पड़ा। राकेश का मुंह लाल हो रहा था और उसकी सांस बन्द हुई जा रही थी साथ ही वह एक कांपती ऊँगली से निशा की ओर इशारा कर रहा था।

'काफी—माई गॉड काफी!'

वह उसे घूरती रही।

'अब मुझे पता चला काफी कड़वी क्यों थी? राक्षसी! तुम फिर अपना खेल खेल रही हो।'

उसने हाथों से कुर्सी के हत्थे थाम लिये और वह उस पर झपटना ही चाहता था।

'तुमने मुझे जहर दे दिया।

निशा उसके पास से उठ कर फायर प्लेस के करीब चली। अब वह भी भयभीत थी उसने 'ना' करने के लिये मुँह खोला, फिर रुक गई। अगले क्षण ही वह उस पर झपट पड़ेगा। उसने अपनी पूरी हिम्मत जुटाई। उसकी आंखों ने राकेश [illegible] आने [illegible]

[illegible]

कर दिया है। इस क्षण तुम कुर्सी से उठ नहीं सकते—तुम हिल नहीं सकते—

यदि वह उसे कुछ और क्षण वहीं रोके रख सकी।

आह! वह क्या है? सड़क पर पैरों की आहट बाहर, बाहर का दरवाजा खुलने का स्वर—

'तुम उठ नहीं सकते।' उसने दोबारा

फिर वह राकेश के निकट से भाग कर सीधी कमरे में बेहोश सी देवेनराय की बांहों में जा गिरी।

'हे भगवान! निशा', वह बोला।

फिर वह अपने साथ आये व्यक्ति की ओर मुड़ा, एक हट्टा-कट्टा वर्दी वाला पुलिस मैन।

'जाओ, जाकर देखो उस कमरे में क्या हो रहा था?' उसने बड़े ध्यान से निशा को एक सोफे पर लिटा दिया और उस पर झुका। मेरी प्रिय गुड़िया, यह लोग तुम्हारे साथ क्या कर रहे थे?'

उसकी आँखें झपकीं और उसके होंठों पर केवल देवेन का नाम आया।

देवेन पुलिसमैन के उसको छूने से होश में आया।

'उस कमरे में तो कुछ भी नहीं है श्रीमान्। सिर्फ एक व्यक्ति कुर्सी पर बैठा है, लगता है किसी भारी दहशत का शिकार हुआ है, और—

'हां।'

'हां श्रीमान वह—मर गया है।

वे दोनों निशा की आवाज सुन कर चौंक गये। जब वह मानो स्वप्न से में बोलती प्रतीत हुई।

'और फिर वह मर गया' मानो वह किसी किताब से पढ़ रही हो।

(समाप्त)

चना कुरमुरा

एक वृद्ध सज्जन बढ़ी हुई कीमतों के विषय में होटल में बैठे बड़-बड़ा रहे थे।

एक सूप के प्याले की क्या कीमत है?

बारह रुपये श्रीमान!

पहले तो मैं एक प्याले का सिर्फ एक रुपया दिया करता था।

तब आप पच्चीस वर्ष के थे श्रीमान्।

स्कूल से बहुत सी पेन्सिलों की निरन्तर चोरी हो रही थी। स्कूल के टीचर्स ने आखिर लम्बी खोज के बाद चौथी क्लास के एक लड़के को रंगे हाथों पकड़ ही लिया।

उसके पिता को टेलीफोन किया—वह बहुत ही अचम्भित हुआ।

'मुझे समझ नहीं आया उसे पेन्सिलें चुराने की क्या आवश्यकता पड़ गई', परेशान पिता बोला, 'मैं तो स्वयं उसके लिये दफ्तर से पेन्सिलें ले आता हूं'।

एक गंजे सिर वाला नाई अपने ग्राहकों को बालों के टॉनिक की बोतल बेचने की कोशिश कर रहा था।

'पर तुम यह कैसे बेच सकते हो जबकि तुम स्वयं गंजे हो?' किसी ने उससे पूछा।'

'इसमें क्या गलत है, उसने उत्तर दिया, 'मैं एक ऐसे व्यक्ति को जानता हूँ जो ब्रेजियर बेचता है।'

ताएक्वोन्डो

ताएक्वोन्डो का एक और उत्तेजक पाठ—चेम्पियन जिमि जगतियानी द्वारा जिनके देश में ताएक्वोन्डो शिक्षा देने के कई स्कूल हैं और जिन्हें अपनी इस कला के कुछ भाग स्वयं ब्रूस ली से शिक्षा ग्रहण करने की विशेषता प्राप्त है।

चौंग-गुल-सियोगी-एलगुल मक्की

(आगे बढ़ने की मुद्रा और ऊपर से रोकना (Pic 4)

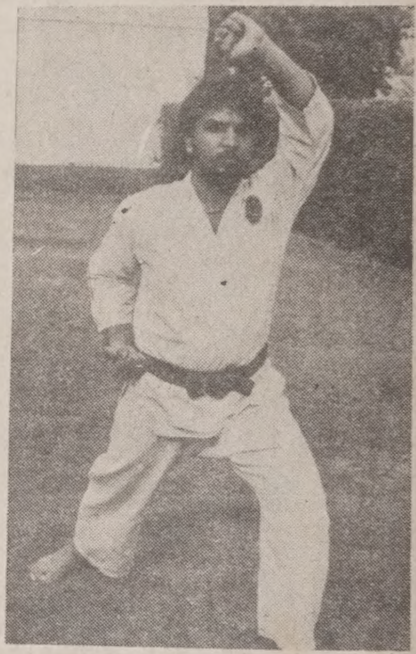
1. चुंग बाई सियोगी मुद्रा में खड़े होइये बायीं टांग आगे बढ़ाइये। कमर से आरम्भ कर बायें हाथ को उठाइये। पहले दायीं आंख के बराबर और कोहनी को कड़ा कर भीतर खींचिये।

2. जब तक कि मुट्ठी सुरक्षात्मक स्थिति में आ जाये, मुट्ठी में हथेली ऊपर की ओर रहती है। जब मुट्ठी माथे के पास आ जाये तो उसे घुमाकर मुट्ठी का पिछला भाग माथे की ओर कर लें। मुट्ठी को तेजी से घुमाना विरोधी के मुक्के या लकड़ी के आक्रमण से सुरक्षा का तरीका है।









हंसना मना है

मेरे मित्र जिनकी सफाई करने की एजेन्सी है ने मुझे एक काम बताया, जिसमें होटल को वैक्यूम क्लीनर से साफ करना था।

'अपना वजन कुछ घटा पाने की आशा से मैंने काम ले लिया—पर मेरी एक शर्त थी। मैं यह काम तभी तक करूंगा जब तक मेरा वजन 10 किलो घटेगा। 'ठीक है' वह बोला, 'पर भूलना ' और मुझे कम से कम दो किलो का ...स जरूर दे देना।'

●

मेरी मां 60 वर्ष की आयु में पहली बार हवाई जहाज से यात्रा करने गई। हवाई जहाज में पहुंचने पर उन्होंने देखा कि उनकी सीट दरवाजे के करीब है और वहां बड़ी तेज हवा लग रही है। क्योंकि मेरी मां को ठंड जल्दी लग जाती हैं, इसलिये वायुयान के एक कर्मचारी से दूसरी सीट देने का अनुरोध किया।

जिस व्यक्ति से उन्होंने बात की थी वह स्टूअर्ड नहीं बल्कि पाइलेट था। बड़ी हो मोहक मुस्कान के साथ उसने पूछा कि क्या यह उनकी पहली हवाई यात्रा है। 'हां' वह बोलीं।

अधिकतर हवाई जहाज उड़ते समय हम लोग दरवाजा बन्द ही रखते हैं, पर मैं आपको दूसरी सीट पर ले चलता हूं। वह उनका हाथ पकड़ उन्हें वायुयान की सबसे बढ़िया सीट पर ले गया—कोटपिट के अन्दर।'

●

छैनी हथौड़ा ले मैं अपने घर में दूसरा दरवाजा बनाने में लगा हुआ था कि मेरे पड़ौसी ने बाड़ के ऊपर से झांक कर पूछा, 'क्या बात है ? फिर से बाहर बन्द हो गए क्या ?'

●

चना कुरमुरा

पिताजी क्या एडिसन ने सर्वप्रथम बोलने वाली मशीन बनाई थी ?

'नहीं, मेरे बेटे, भगवान ने सबसे पहली बोलने की मशीन बनाई थी। एडिसन ने तो वह मशीन बनाई थी जिसे बन्द भी किया जा सकता था ।

●

'मोटर वाला दूसरे से, मुझे गांव की सुन्दरता बहुत पसन्द है ।'

'मुझे भी, मैं तो इन्हें कभी-कभी लिफ्ट भी दे देता हूं ।'

●

अंक २३ में प्रकाशित वर्ग पहेली का सही हल

1 कु	ल	2 बु	3 ला	ह	4 ट
म	■	5 ग	ल	■	न
6 कु	7 ल	क	■	8 दु	■
9 मं	ट	र	10 ग	श	11 ती
■	का	■	12 उ	म	स
13 यु	ना	नी	■	14 नं	ऊ

(निर्णय लाटरी द्वारा)

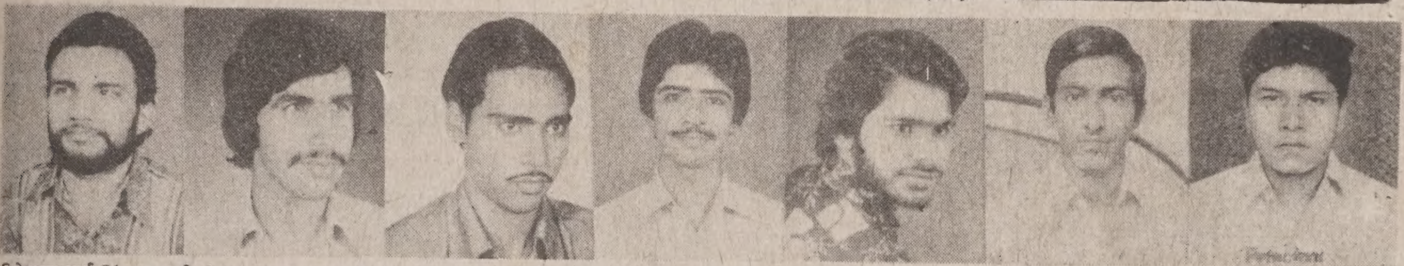
विजेता— श्रीकृष्ण 'नाकाम', वाई-2246, मंगोलपुरी, दिल्ली-33

अंक २४ में प्रकाशित चित्र वर्ग पहेली का सही हल

मितलाहट, रतजगा, खोंमचेवाला, आंगन, समकालीन, अजवाइन, (ला जा खों आं का इ)

सही हल : आंखों का इलाज

विजेता : (निर्णय लाटरी द्वारा) सतीश गुप्ता 'प्रोफेशर' टोकरी रोड, बाटा मोड़, गया (बिहार)



दिनेशदत्त शर्मा 74, ब्लाक-पी पांडव नगर पटपड़ गंज दिल्ली-92, 25 वर्ष फिल्म देखना ।

विजय खुराना, 179/6 बहादुर गढ़, रोहतक, 22 वर्ष, पत्र मित्रता करना, दीवाना पढ़ना ।

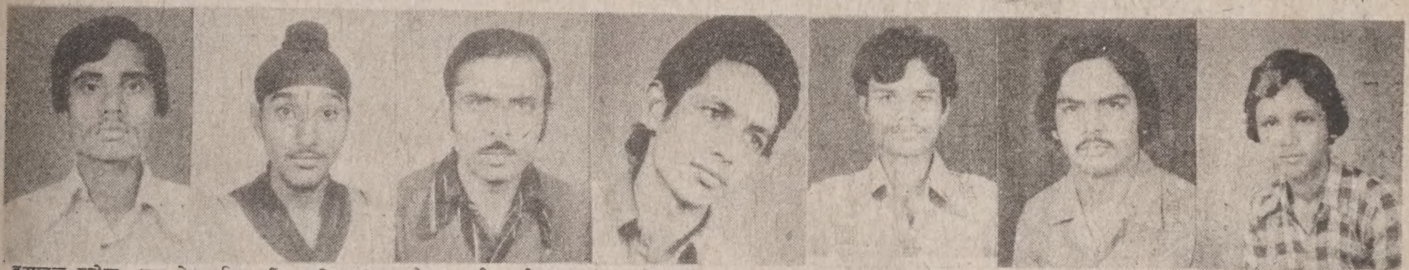
सगीरूल हक आसी, द्वारा अब्दुल वदूद, सिगही कलां; आरा, (बिहार), 20 वर्ष ।

मनोहर लाल खिलवानी, बी-7/30, कृष्णा नगर दिल्ली, 21 वर्ष, फैशन करना ।

रविन्द्र कुमार मघबाल, सुपुत्र श्री पूरनचन्द, 17/116 बलदेव नगर, 19 वर्ष, पेन्टिंग करना ।

आर. पी. बठला, खुराना रेडियोज, मेन बाजार कलानौर 22 वर्ष, पत्र-मित्रता करना ।

हेमत कुमार, 9429 आजाद मार्किट दिल्ली-6, 19 वर्ष, हंसते रहना, दीवाना पढ़ना ।



ब्रह्मानन्द सरोया, आर. जेड ए. सागरपुर, नई दिल्ली-46 20 वर्ष दीवाना पढ़ना ।

तजिन्दर सिंह भाटिया, डी-12/ए, पोलो रोड, विजय नगर, 18 वर्ष, फरमाईश भेजना ।

देशवन्धु, सी. 4 जी.क्वाटर नं. 142 बी. जनकपुरी, नई दिल्ली 33 वर्ष पत्र-मित्रता करना ।

मनजीत राय तनेजा, न्यू बस स्टैण्ड, गिदड़वाहा. (पंजाब) 20 वर्ष, दीवाना पढ़ना ।

कुमार लक्ष्मण शिवराय साक्वे, निम्बोनि बाग, गोपंडी, मु. न., 42, 25 वर्ष, फिल्मी कलाकारी ।

अशोक कुमार जैन, नं. 26 वर्धमान जैन सोसायटी, 21 वर्ष, घूमना, पत्र-मित्रता ।

विजेन्द्र हनवाल, सी. 1 हनवाल बाजार, झाबुआ (म. प्र.), 19 वर्ष, दूसरों की सुनना ।



छत्र मंगल वज्राचार्य, 8/404 फसिकेव, बटु, काठमाडौं, नैपाल, 19 वर्ष, पढ़ना, और खेलना ।

मुकेश मेहता, 2 एम./19 फरीदाबाद, 16 वर्ष, क्रिकेट में आगे बढ़ना ।

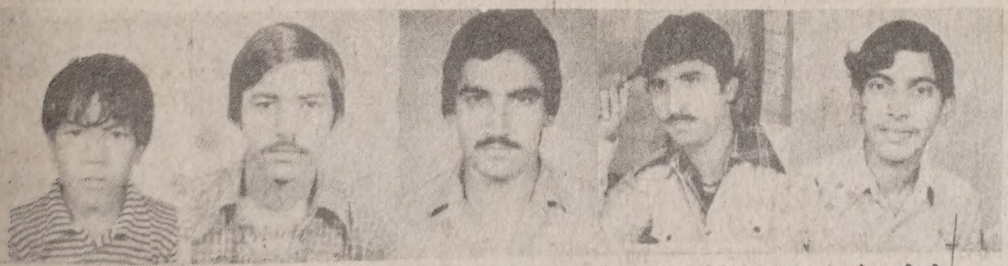
नरेन्द्र बूलचन्दानी, पीली कोठी आजाद नगर, मुरार, ग्वालियर, 27 वर्ष, फिल्म देखना ।

जगदीश करनाणी, हावड़ा फ्लोर मिल लि. 19 वर्ष, पत्र-मित्रता करना, दीवाना पढ़ना ।

पवन कुमार सरोया, आर. जेड 1463 सागरपुर, नई दिल्ली-46 15 वर्ष, रेडियो सुनना ।

मोहम्मद रफीक म. नं. 3045, गुलजार मस्जिद, जयपुर, 24 वर्ष, फिल्में देखना, घूमना ।

वासु मोती रामाणी, 20 कुंवर नगर, जलगांव, 17 वर्ष, पत्र-मित्रता करना ।



दिनेश श्रेष्ट, झोंदेलाल, बाग-मती अंचल, काठमांडों, वर्ष, फुटबाल, कुंगफू, कराटे ।

शेख गयास गाजीपुरी, अध्यक्ष 12 अंतर्राष्ट्रीय रेलवे स्टेशन, बरकाना, 22 वर्ष, चित्रकारी, ।

सुनील महाजन, 130 आदर्श नगर, जालंधर, (पंजाब), 23 वर्ष, पत्र-मित्रता करना ।

सतीश कुमार सेठी, सेठी किरयाना स्टोर, प्रताप नगर, लुधियाना, 23 वर्ष, गाने गाना ।

प्रवीन जैन पम्मी, बी. ए. प्रथम जी. एन. एल. कालां वाली, सिरसा, 18 वर्ष गाने गाना ।

दीवाना फ्रैंड्स क्लब

दीवाना फ्रैंड्स क्लब के मेम्बर बन कर फ्रैंडशिप के कालम में अपना फोटो छपवाइये। मेम्बर बनने के लिए कूपन भर कर अपने पासपोर्ट साइज के फोटोग्राफ के साथ भेज दीजिये जिसे दीवाना में प्रकाशित किया जायेगा। फोटो के पीछे अपना पूरा नाम लिखना न भूलें.

हमारा पता : दीवाना फ्रैंड्स क्लब, ८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग, नई दिल्ली-११०००२

कृपया अपना नाम व पता हिन्दी में साफ-साफ लिखें।

नाम ——————

पता ——————

——————

आयु —————— शौक ——————

तेज प्रेस, नया बाजार, दिल्ली में तेज [illegible] लिमिटेड के लिये पन्नालाल जैन द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित, प्रबन्ध सम्पादक विश्वबन्धु गुप्ता.

"गरीबी मिटाने का एक ही जादू है—और वह है कड़ी मेहनत, इसके साथ ही अनुशासन और अपने उद्देश्यों की सही और साफ़ जानकारी।"

—इन्दिरा गांधी

सत्यमेव जयते-श्रम एव जयते



davp 82/560